नवम्बर 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा
दिवाली की शुभकामनाएँ

चिंटू की पसन्द
मैं सिर्फ़ यह साबुन चाहता हूँ।
उत्कृष्ट पसन्द, मैडम ! मैसूर चन्दन बेबी साबुन चन्दन के तेल और बादाम के तेल से भरपूर है। यह त्वचा के लिए अति उत्तम है।
स्मार्ट बच्चे सदा मैसूर चन्दन बेबी साबुन पसन्द करते हैं।
द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में ८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।
Mysore Sandal
Baby
Soap
Almond oil moisturiser and antiseptic soap.
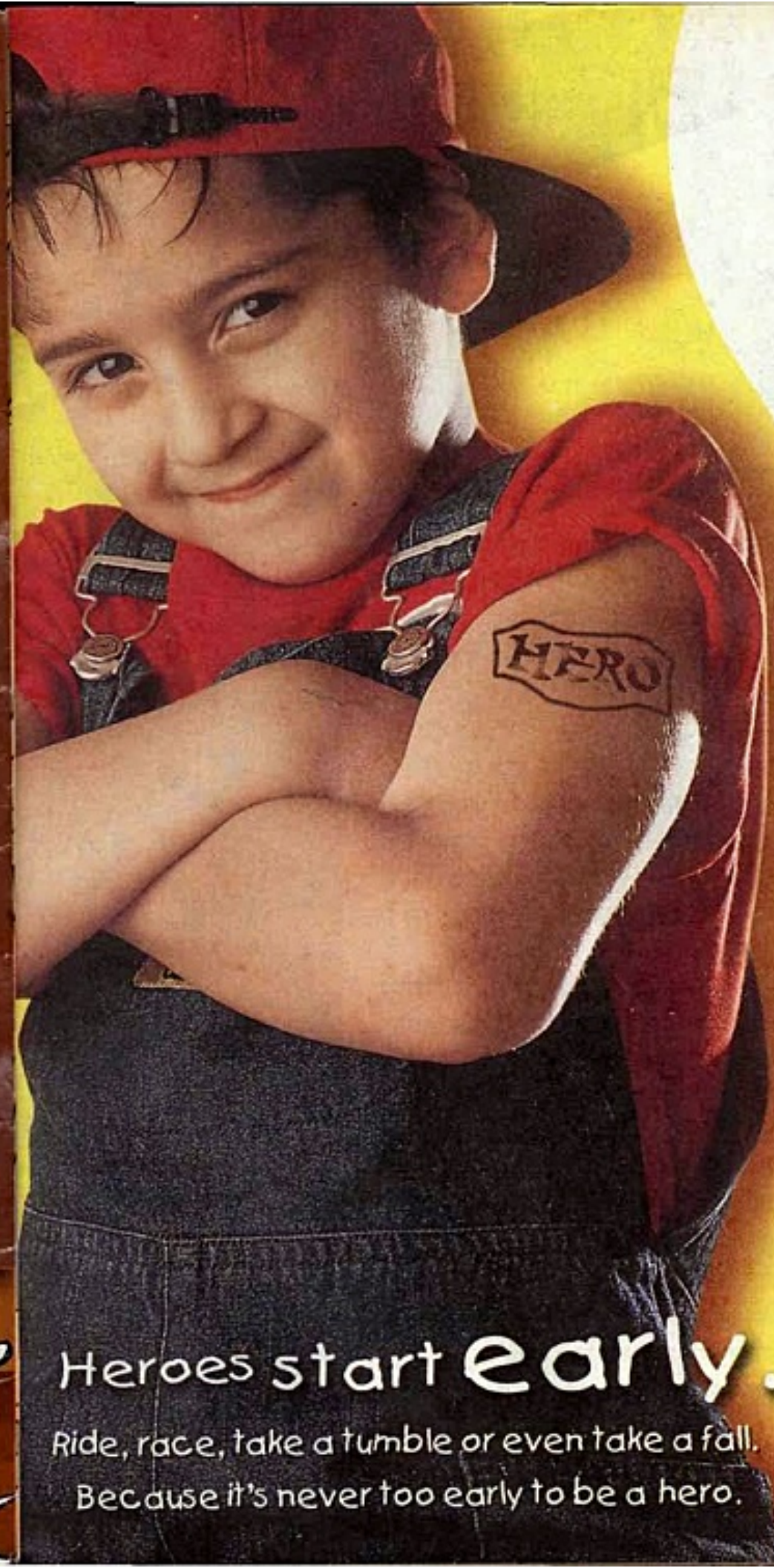
HERO
PIRANHA
ACTIVE
CADET HX
YANKEE
ROBO COP
Heroes start early.
Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.
HERO CYCLES
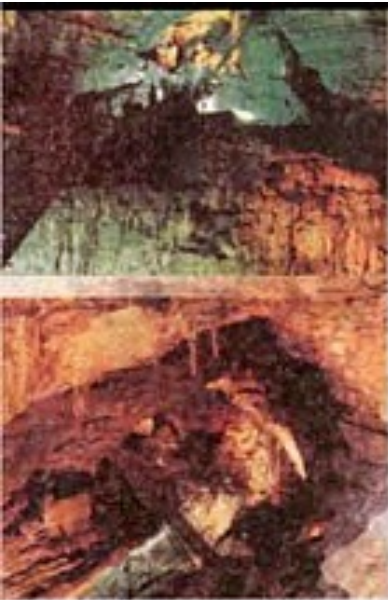
बौरा - पहाड़ियों में सम्मोहन

आन्ध्र प्रदेश प्रकृति माता का प्रिय पात्र रहा है, क्योंकि उसने इस राज्य को देश भर में दीर्घतम समुद्र तट, मनोरम वन प्रदेश तथा सुरम्य पहाड़ियाँ दी हैं।

राज्य में देश की सबसे लम्बी गुफा-प्रणाली भी है, समतल भूमि पर, करनूल जिलान्तर्गत बेलम गुफाएँ। लेकिन पहाड़ियों पर उतनी ही पुरानी गुफा प्रणाली बौरा है। .

पूर्वी घाट में बौरा एक गाँव है जो विजयानगरम जिला में है। यह गाँव उस सड़क से छः किलोमीटर दूर है जो विसाखापतनम से आरकू घाटी जाती है।

चूना पत्थर में गुफाएँ १५० फुट से भी अधिक गहराई तक जाती हैं और गोस्थनी नदी गुफा में ही कहीं से आरम्भ होती है और पहाड़ियों से समतल पर बहती हुई भीमुनिपतनम में समुद्र में मिल जाती है। गुफाओं में एक शिवलिंग है और गाय की एक आकृति लिंग पर खड़ी है। कहा जाता है, नदी गाय के थन से निकली है, इसीलिए इसका नाम गोस्थनी है।

आन्ध्र प्रदेश पर्यटन ने गुफा में प्रकाश का प्रबंध कर दिया है, जिससे पर्यटक गुफा में काफी दूर तक जा सकें और उसके अंदर चित्ताकर्षक आरोही और निलम्बी निक्षेपों की रचनाओं को देख सकें। आरोही निक्षेप हिमवर्तिका आकार की रचनाएँ हैं जो तब बनती हैं जब चूना पत्थर इसपर से होकर गुजरने वाले जल में कार्बन डॉक्साइड की उपस्थिति के कारण घुल जाता है। चूना पत्थर में बौरा गुफाएँ लाखों वर्ष पुरानी हैं और विश्वास किया जाता है कि हजारों वर्ष पूर्व इनमें लोग निवास करते थे।

आरकू घाटी में जानेवाले लोग निस्सन्देह टायडा में, जो एक वन शिविर है तथा बौरा गुफाओं में रुकेंगे ताके वे लाखों वर्ष के रहस्य की खोज कर सकें।

वहाँ कैसे पहुँचे :- विसाखापतनम से ९० कि.मी. तथा आरकू से १५ कि.मी. दूर बौरा गुफाओं तक वाइजग से सड़क या रेल से जाया जा सकता है। वाइजग और आरकू के बीच सुंदर रेलवे लाइन है, जिसमें बौरा गुफाओं पर गाड़ी रुकती है।

बौरा गुफाओं के भ्रमण से न चूकें !
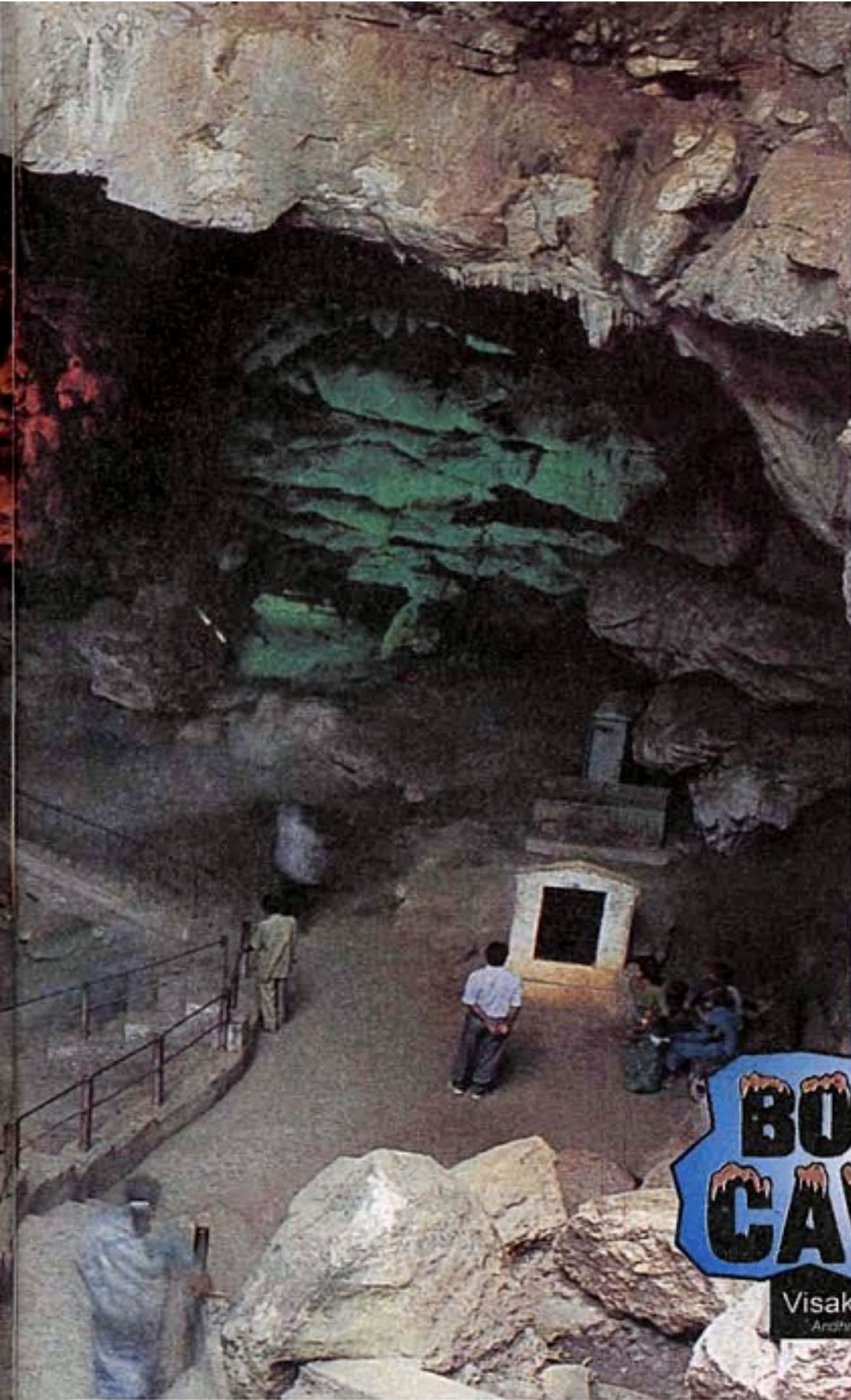
Tourism & Culture Department,
Government of Andhra Pradesh,
3rd Floor, 'A' Block, Secretariat,
Hyderabad - 500 022, AP. India.
Ph:+91-40-3456717, 3450079,
3450991, 3450170;
Fax:+91-40-3454966,3450068.
Central Reservation Offices of
APTDC at:Visakhapatnam:
LIC Building,Daba Garden,
Ph:0891-746446,Fax:713135;
Hyderabad: Opp. BRKR Bhavan,
Tank Bund Road,Ph: 040-3453036,
3450165 Fax: 040-3453086;
Secunderabad: Yatrinivas
Complex, S.P. Road,
Ph: 040-7893100, 7816375;
Tirupati: T.P. Area, Beside
Venkateswara Bus Station, Ph:
08574-55385, Telefax: 08574-
52062; Mobile: 98480-07033
Tirumala: 08574-70055, 70589;
Nellore: H.NO. 24-1/1613, 1st
floor, Opp. Kasturba Kalakshetram,
Police Office Road, Dargha Mitta.
Ph: 0861-306089; Vijayawada:
Hotel Ilapuram Complex, Gandhi
Nagar, Ph: 0866-570255,
Information & Reservation Counter
at APSRTC, Ph:0866-523966;
APTDC Divisional
Offices at : Kurnool:
C/o 6, C-Camp, Nandyal Road,
Telefax: 08518-70104;
Nagarjunasagar: 08680-77364,
76540; Srisailam: 08524-88311;
Warangal: 08712-459201,
446606; Chennai: +91(44)
5381213; Bangalore: +91(80)
2383361, 2383362; Fax:+91(80)
2383363
BORRA
CAVES
Visakhapatnam
Andhra Pradesh, India
Email: aptourism@hotmail.com / aptourism@rediffmail.com / info@aptourism.com.
Visit us at: www.aptourism.com or www.indiaoverland.com For Round the Clock Tourist Information on A.P.
Dial: 1901-334033 from Hyderabad / Secunderabad & 0901-334033 from other places in India.
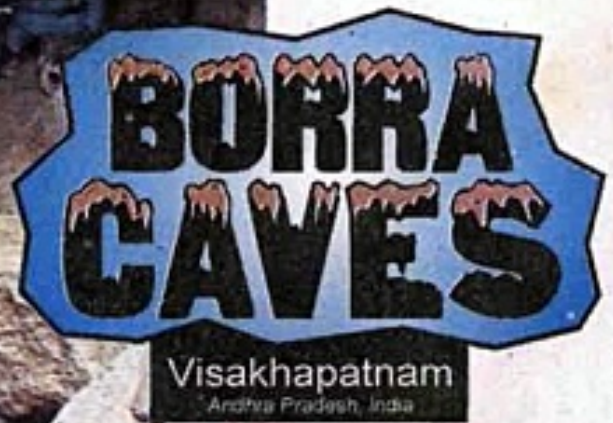
विशेष आकर्षण

सम्पुंट - १०६ नवम्बर - २००२ सञ्चिका - ११

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

छोटा रास्ता नहीं; कोई अन्य मार्ग नहीं

किसी तीर्थ-स्थल में ऐसा नियम था कि जब पुजारी पावन ग्रंथ से अनुच्छेद का पाठ करे तो पूर्ण शान्ति का पालन किया जाये। एक दिन जब वह अपना कर्त्तव्य कर रहा था तो भक्तमण्डली के एक श्रोता ने अपने मित्र से बहुत धीमी आवाज में कहा, ''शायद पुजारी गलत अनुच्छेद का पाठ कर रहा है।''

''क्या भूल गये हो कि तुम्हें शान्त रहना है।'' दोनों के पीछे बैठे हुए एक व्यक्ति ने स्मरण दिलाया। शीघ्र ही चौथा और पाँचवा व्यक्ति भी शामिल हो गया। यद्यपि वे फुसफुसाकर बोले। तब तक पुजारी श्रोताओं को कडी नजर से देख रहा था। एक छठे व्यक्ति ने कहा, ''परन्तु मैं चुपचाप हूँ।'' यह दृष्टांत आज के विश्व का प्रतीक है - विशेषकर हमारे अपने भारत का। ''दूसरे दोषी हैं, मैं नहीं'' - हमारा रवैया है। सभी प्रकार की हिंसा, जिसमें आतंकवाद भी शामिल है केवल तभी फल-फूल सकती है जब इस प्रकार की मनोवृत्ति का बोलबाला हो। भारत के शत्रु इतनी आसानी से हमें क्षति नहीं पहुँचा सकते जैसा कि अभी वे कर पा रहे हैं यदि हमारा अपना देश मानसिक रूप से अनुशासित हो और हम सब दायित्वपूर्ण ढंग से आचरण करें।

चीजों को सही स्थान पर लाने के लिए क्या किया जाये? सर्वाधिक प्रभावी कदम सर्वाधिक अगोचर रहता है। हममें से प्रत्येक को अनिवार्य रूप से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। हममें से प्रत्येक को अनिवार्य रूप से अपने प्रति सत्यनिष्ठ होना चाहिए। हमें इतना दृढ होना चाहिए कि अराजकता और अनुशासनहीनता की आँधी में हमारे पाँव न उखड़ जायें। हमें अपने अन्तःकरण की दृढ शिला पर अवस्थित होना चाहिए। इसके लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। वास्तव में इसका कोई और विकल्प नहीं है।

आयें, जिस प्रकार दिवाली हमारे चतुर्दिक अन्धकार को दूर कर देती है, वैसे ही हम भी अपने-अपने मन से काले विचारों को दूर भगा दें और उसे ज्योतिर्मय बना दें।

सम्पादक :" *विश्वम*
Visit us at : http://www.chandamama.org
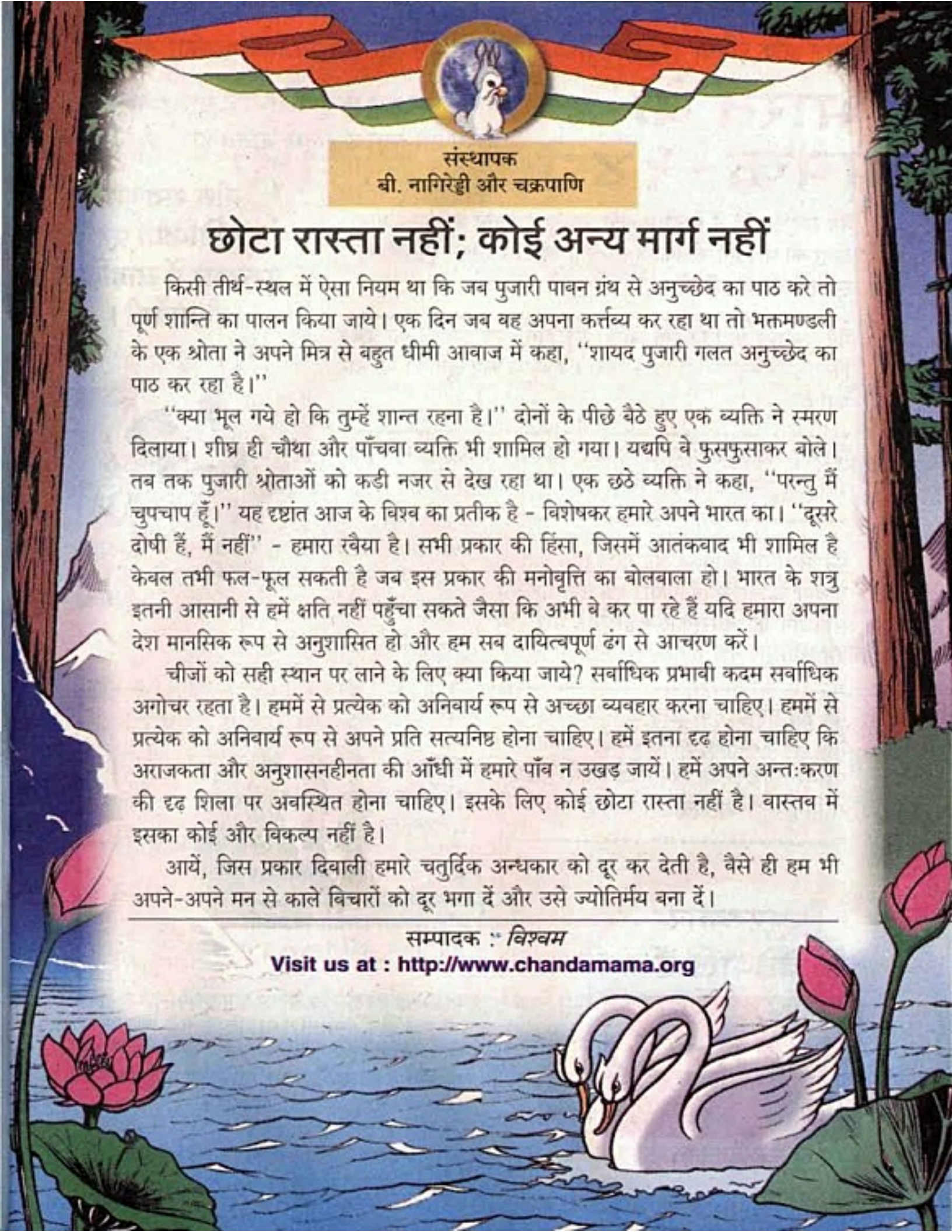
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१४

यहाँ हमारे देश के कुछ समाज सुधारकों का प्रसंग है। क्या उन्हें तुम जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैंने सन् १८३० में इंग्लैंड में सती प्रथा के उन्मूलन के लिए अपील दायर की थी। मैंने कोलकाता में पहला भारतीय विज्ञान संस्थान की स्थापना की थी। मैं कौन हूँ?

2. मैंने "मनुष्य के लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर" का प्रचार किया। मैंने केरल में जो मंदिर बनवाये वे सबके लिए खुले थे। मेरा नाम क्या है?

3. मैंने सन् १८८२ में 'गो सुरक्षा समिति' की स्थापना की। मैंने मूर्तिपूजा और पशु हत्या का विरोध किया। क्या मेरा नाम जानते हो?

4. मैंने निरक्षरता के विरुद्ध और गरीब तथा नारी के उत्थान के लिए संघर्ष किया। मुझे लोग भारतीय संविधान का वास्तुकार कहते हैं। मेरा नाम बताओ।

5. मैंने कुष्ठ रोगियों तथा अन्य असमर्थ व्यक्तियों के लिए ग्राम अस्पताल, आनन्दवन की स्थापना की। मुझे सन् १९९९ के लिए गाँधी शान्ति पुरस्कार से विभूषित किया गया। मैं कौन हूँ?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक .... है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ दिसम्बर से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१४
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

पाद-तप

क्या आप कभी तीर्थयात्रा पर पैदल गये हैं? संभवतः आप महाराष्ट्र के वरकारियों के साथ जा सकते हैं जो पंढरपुर के अधिष्ठाता देव विट्ठल के भक्त हैं। उनकी वार्षिक यात्रा जिसे पंढरपुर यात्रा कहते हैं, पिछले ७०० वर्षों से चलती आ रही है। यात्रा अलिन्दी से आरम्भ होती है जो इन्द्रायनी नदी के तट पर है और चन्द्रभागा नदी के तट पर स्थित पंढरपुर मंदिर में परिसमाप्त होती है। यात्रियों को निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचने में एक महीना लगता है। मार्ग का नाम महामार्ग है और भारतीय महीना आषाढ़ में यह यात्रा सामान्यतः की जाती है।

यात्री मार्ग में अभंग या भजन गाते हुए समूह में चलते हैं जिसे डिन्डी कहते हैं। कभी-कभी महिला तीर्थयात्री अपने सिर पर तुलसी के साथ छोटा-सा वर्गाकार पीतल का पात्र रखकर चलती हैं। उनका सामान उनके साथ-साथ ट्रक में जाता है। मार्ग में पड़नेवाले गाँवों और शहरों के परिवार उन्हें भोजन देकर बराबर उनकी देख-भाल करते हैं।

रात में मछली !

निकोबार के आदिवासी मछली मारने के कई तरीके प्रयोग में लाते हैं। एक विचित्र तरीका है रात में मछली का शिकार। भाटा काल में समुद्र का जल तट से दूर चला जाता है जिससे प्रवालभित्ति दिखाई पड़ जाती है। जब ऐसा होता है, तब छोटी मछलियाँ प्रवाल भित्तियों के छिछले पानी में उलझ जाती हैं। तब निकोबार वासी गाँव से बाहर आ जाते हैं और नारियल पत्रों के गट्ठों की मशाल के साथ मछली का शिकार करते हैं। पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे भी रात्रि में मछली-आखेट की इस कार्रवाई में भाग लेते हैं।

नागार्जुन कोण्ड

क्या तुम एक ऐसे स्थान का भ्रमण करना चाहोगे जहाँ इतिहास और समकालीन साथ-साथ खडे हैं? तब आन्ध्र प्रदेश में नागार्जन कोण्ड अथवा नागार्जुन पहाड़ी की ओर बढ़ चलो। यहाँ एक प्राचीन बौद्ध मठ और विश्वविद्यालय का अवशेष विश्व के एक विशालतम चिनाई बाँध के साथ दूसरों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए होड़ ले रहा है।

प्राचीन काल में विजयपुरी के नाम से विख्यात नागार्जुन कोण्ड इक्ष्वाकु वंश के काल में समृद्ध हुआ। तीसरी शताब्दी के समय की बौद्ध सभ्यता के अवशेष यहाँ की खुदाई में पाये गये। जो भी हो, इक्ष्वाकु वंश के पतन के बाद चौथी शताब्दी में नागार्जुन कोण्ड की शान समाप्त हो गई।

इक्ष्वाकु वंश के स्वर्णकाल में निर्मित कीर्त्तिस्तम्भ सन् १९२६ में खुदाई के बाद पुनः प्रकाश में आये।

यहाँ तुम बौद्ध मठ के अवशेषों को पिरामिड के आकार में निर्मित पाओगे। इस पाँच मंजिले मठ में कुल १५०० कक्ष थे। इसमें बहुत उत्तम जल और वायु प्रणाली भी थी। यहाँ एक विख्यात बौद्ध विश्वविद्यालय भी होने का विश्वास किया जाता है।

यहाँ कृष्णा नदी पर नागार्जुन सागर बाँध भी है। यह बाँध भारत में सबसे पहले आरंभ की गई पनबिजली की योजनाओं में से एक है। यह १२५ मी. की ऊँचाई पर विश्व में सबसे ऊँची इमारती बाँधों में से एक है।

वहाँ कैसे पहुँचे

नागार्जुन कोंड हैदराबाद से १५० कि.मी. पर बसा हुआ है और हैदराबाद, विजयवाडा तथा गुंटूर से यहाँ के लिए बसें उपलब्ध हैं।

माया सरोवर

10

(सर्पनख और सर्पस्वर नामक दो भाई जलाश्वों पर सवार होकर बौनों की बस्ती में आये। सर्पनख ने वहाँ कृपाणजित्त के गले को रस्सी से जकड़ लिया। नरवानर, सर्पस्वर पर टूट पड़ा और उसे उठाकर ले गया। यह जानते ही जयशील और सिद्धसाधक बस्ती की ओर आने लगे, तो बीच रास्ते में उन्होंने देखा कि सर्पनख जलाश्व पर सवार होकर उसे तेज़ी से दौड़ाते हुए जा रहा है।) - इसके बाद

सर्पनख एक वृक्ष के पास आया और रुक गया। फिर वह 'सर्पस्वर' का नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। पर किसी ने भी उसका जवाब नहीं दिया। इससे सर्पनख हताश हो गया। किन्तु वह अपनी निस्सहायता पर काबू पा नहीं सका। वह क्रोधित हो उठा और आवेश में आकर म्यान से तलवार निकाली और पास ही के वृक्ष के तने में भोंक दी। फिर कहने लगा, ''मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, अपने भाई को जीवित नहीं देख सका तो उसके प्राण हरनेवाले नरवानर को और उसके मालिक के सिर को धड़ से अलग करके ही रहूँगा। जब तक यह काम पूरा नहीं करूँगा, तब तक इन्हीं प्रदेशों में रहूँगा।''

झाड़ियों के पीछे छिपे जयशील ने ये बातें सुनीं। खुश होते हुए उसने सिद्धसाधक से कहा, ''साधक, तुमने उस सर्पनख की प्रतिज्ञा सुनी है न? उसने अरण्य के वृक्षों को साक्षी बनाकर यह कठोर प्रतिज्ञा की।''

"जयशील, भाई से बिछड़ जाने के दुख में वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है। पर हम क्या उसे जीवित पकड़ पायेंगे?"

जयशील क्षण भर के लिए सोच में पड़ गया और कहा, "साधक, तुम्हारा रूप, बात करने का तुम्हारा तरीका सामान्य मानवों से भिन्न है। इसलिए तुम अकेले ही उसे जीवित पकड़ सकते हो। जैसे भी हो, तुम उसके पास चले जाओ और उससे वह तलवार छीनने का प्रयास करो। उससे हमें जानना होगा कि माया सरोवर पहुँचने के लिए हमें कैसे और कहाँ से जाना होगा। यह काम मैं खुद संभालूँगा।"

बस, सिद्धसाधक, सर्पनख से मिलने निकल पड़ा। उसके चले जाने के बाद जयशील ने बौनों के सेनाध्यक्ष से कहा, "सेनाध्यक्ष, इस विचित्र रूपवाले की शक्ति-सामर्थ्य क्या है, हम नहीं जानते। ज़रूरत पड़ने पर तुम्हें सिद्धसाधक को मदद पहुँचानी होगी। क्या किसी वृक्ष के पीछे छिपकर उनपर निगरानी रख सकते हो?"

"आप आज्ञा दें और मैं न करूँ, यह कैसे हो सकता है।" कहते हुए सेनाध्यक्ष अपने वाहन पर बैठकर निकल पड़ा। सिद्धसाधक अपने शूल को ऊपर उठाते हुए सर्पनख के पास जाकर ऊँची आवाज़ में कहने लगा, "कौन है वह, जिसने मेरे वृक्ष में तलवार भोंक दी? जानते नहीं, मैं इस वृक्ष की पूजा करता हूँ? किसने उसे घायल करने का साहस किया? उसकी कराह सुनकर मैं दया से पसीज अठा।" वह गरजता हुआ बोला।

यह सुनते ही सर्पनख ने तलवार वृक्ष के तने से खींच ली और उसे साधक की छाती का निशाना बनाकर निर्भय होकर खड़ा हो गया। उसकी ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुए साधक ने कहा, "अरे, तुम्हें देखते हुए लगता है कि तुम माया सरेश्वर के सेवक हो। मेरा अनुमान सही है न? सर्पनख साधक की इन बातों को सुनकर भयभीत हो गया। उसे लगा कि यह कोई बड़ा मांत्रिक होगा। अथवा उसे इसका कैसे पता लगता कि मैं माया सरेश्वर का सेवक हूँ।

सिद्धसाधक जान गया कि उसकी चाल कामयाब हो गयी। मन ही मन खुश होते हुए उसने गंभीर स्वर में कहा, "सरेश्वर के सेवक होने के गर्व में चूर होकर मेरी बातें सुनने के बाद भी घोड़े पर इतने ठाट से बैठने की जुर्रत कर रहे हो? पहले घोड़े से उतरो।"

सर्पनख को संदेह हुआ और पूछा, ''तुमे मेरे मालिक का नाम कैसे जानते हो? वृक्ष की कराह सुन सकने की शक्ति रखनेवाले इतने बड़े मांत्रिक हो क्या?''

सिद्धसाधक ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''अरे ओ सर्पनख, मैं तुम्हारे मित्र मकरकेतु को भी जानता हूँ। इस तलवार से तुम्हारी हानि होगी। इसलिए चुपचाप यह मेरे सुपुर्द कर दो। इसी में तुम्हारी भलाई है।''

सर्पनख ने दाँत पीसते हुए कहा, ''अब याद आ रहा है कि तुम कौन हो। नरवानर के मालिक कहा, ''तुम शायद समझते हो कि मैं एक साधारण कापालिक हूँ। पर नहीं, मैं एक महान सिद्धसाधक हूँ।''

''मैं भली-भाँति तुम्हारी चालें समझता हूँ। मुझे पकड़कर किसी क्षुद्र देवता के पाँवों पर मेरी बलि चढ़ाना चाहते हो!'' यों कहते हुए वह साधक पर टूट पड़ा।

पर पल-भर में बौनों का सेनाध्यक्ष पीछे से आया और अपने भेड़ से सर्पनख पर वार करवाया। सर्पनख औंधे मुँह गिर पड़ा और उसकी तलवार दूर जा गिरी।

सिद्धसाधक ने तुरंत तलवार पर अपना पैर रख दिया। इतने में जयशील भी वहाँ आ पहुँचा। औंधे मुँह गिरे सर्पनख को उठाते हुए उसने कहा, ''अरे सर्पनख, तुम्हारा नाम तो अजीब है ही, साथ ही तुम्हारा रूप भी अजीब है। हम जानते हैं कि सर्प के दाँत होते हैं, पर यह नहीं जानते कि साँप के नाखून भी होते हैं।'' कहते हुए उसने सिद्धसाधक से तलवार ले ली और उसे देने का नाटक करते हुए कहा, ''खड्ग-युद्ध करने की अब भी तुममें इतनी चाह है तो लो।''

इस पर सर्पनख ने झल्लाते हुए कहा, ''जो हुआ, वह क्या खड्ग-युद्ध था? वह तो मल्लयुद्ध से भी हीन है।''

दूसरे ही क्षण सर्पनख ने ज़मीन को अपने पैरों से रौंदा और सिद्धसाधक पर टूट पड़ा। बस एक ही क्षण में सिद्धसाधक ने उसकी कमर पकड़ ली और ऊपर उठाकर फेंक दिया। उसने चाहा कि वह नीचे गिरे, उसके पहले ही उसे पकड़ लूँ, पर गिरते समय उसका गला और उसका एक पैर साधक के हाथ में आ गये। इसपर खुश होते हुए साधक ने सर्पनख को हवा में घुमाया और कहा, ''वाह, अच्छा हुआ, यह हमारे हाथ आ गया। निस्संदेह यह महाकाल का सही बलि-पशु है।'' कहते हुए उसे ज़मीन पर पटक दिया।

सर्पनख थर-थर काँपने लगा। औंधे मुँह गिरकर वह बैठ गया और दीन स्वर में कहने लगा, ''महाशयो, मुझे मारो मत। मैं और मेरा भाई मकरकेतु को ढूँढ़ते हुए इन प्रदेशों में आये हैं। मेरे भाई सर्पस्वर को एक नरमानव उठाकर ले गया। उसे ढूँढ़ निकालूँगा और मैं लौट जाऊँगा।''

''अच्छा हुआ, तुम्हारी बुद्धि ठिकाने आ गयी।'' कहते हुए जयशील ने साधक से कहा, ''साधक, इसे बलि चढ़ाने के लिए अभी बहुत समय है। जल्दबाजी मत करो।'' फिर उसने सर्पनख की ओर मुड़कर कहा, ''तुम्हारे भाई को ढूँढ़ने के काम में हम भी तुम्हारी मदद करेंगे। पर इसके पहले तुम्हें हमें वचन देना होगा कि तुम हमें माया सरोवर के सरेश्वर के पास ले जाओगे।''

यह सुनते ही सर्पनख का चेहरा फीका पड़ गया और काँपते हुए स्वर में कहने लगा, ''जिस सरोवर में वे रहते हैं, उसका पता बताऊँगा तो मेरे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। यह शाप है।''

''तो ठीक है, वह शाप मैं खुद अमल में ले

आऊँगा।'' कहते हुए जयशील ने जैसे ही तलवार निकाली कि चिल्लाहटें सुनायी पड़ीं। सबने मुड़कर उस ओर देखा।

उन्होंने देखा कि कृपाणजि एक जलाश्व पर सवार है और तलवार घुमाता हुआ चिल्ला रहा है, ''जयशील कहाँ है? उसका साथी कापालिक कहाँ है? उन्हें मार डालूँगा, उनके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।'' यों चिल्लाते हुए वह पेड़ों के बीच में से घोड़ा दौड़ा रहा है।

कृपाणजित को देखते ही सिद्धसाधक ने शूल उठाया और क्रोध-भरे स्वर में कहने लगा, ''वाह, कितने लंबे अर्से के बाद यह कृपाणजित मेरे हाथ आया है। मैं इसे अपने शूल का शिकार बनाऊँगा।''

सर्पनख ने तुरंत सिद्धसाधक का हाथ पकड़ लिया और कहा, ''महाशय, रुक जाइये। मेरी बात सुनिये। इस दुष्ट का नरवानर ही मेरे भाई को उठाकर ले गया। इसे मार ड़ालने दीजिए और पता लगा लेने दीजिए कि वह नरवानर आखिर है कहाँ?''

जयशील ने तलवार सर्पनख के हाथ में थमा दी और कहा, ''वह कृपाणजित्त खड्ग-युद्ध में माहिर है। सावधान रहना।'' फिर वह साधक को लेकर वृक्षों के पीछे चला गया। इतने में जलाश्व को दौड़ाते हुए कृपाणजित्त ने सर्पनख को देख लिया और रुक गया और पूछा, ''तुम कौन हो? तुम वहीं आदमी तो नहीं हो, जिसने गडेकौंडा की बस्ती में मेरे गले में फंदा फंसाया?''

''हाँ, वह मैं ही हूँ। अब तुम जिस जलाश्व पर सवार हो, वह मेरे भाई का है। तुमने मेरे भाई के साथ क्या किया?'' कहते हुए वह कृपाणजित की ओर बढ़ा।

कृपाणजित ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और कहा, ''जहाँ हो, वहीं रुक जाओ। नरवानर अचानक जलाश्व पर बैठे तुम्हारे भाई पर टूट पड़ा और कहीं उठा ले गया। इस अश्व को मैंने बस्ती के एक पेड़ के पास पकडा था।''

''मैं जो पूछ रहा हूँ, उसका सीधा-सादा जवाब देना। मेरा भाई कहाँ है?'' कहते हुए सर्पनख ने घोडे को कृपाणजित की ओर दौड़ाया।

अश्व को तेज़ी से अपनी ओर आते हुए देखकर कृपाणजित्त ड़र के मारे काँपने लगा और अपने अश्व को पीछे घुमाया। कहने लगा, ''अपने कट्टर दुश्मन जयशील को मारने के बाद ही, मरना

है। इस प्रदेश के इर्द-गिर्द तुम्हारी जाति के लोग बसे हुए हैं। उन्हें सावधान कर दो। क्या उन दोनों को जीवित पकड पाना तुम्हारे बस की बात है?''

''मालिक, यह थोड़े ही कोई बडा काम है। मैं अपने लोगों को सचेत करता जाऊँगा।'' कहते हुए सेनाध्यक्ष ने अपना घोड़ा बस्ती की ओर दौड़ाया।

''सिद्धसाधक, जो टीला दीख रहा है, उसपर खड़े हो जायेंगे और देखेंगे कि बौने जाति के लोग क्या कमाल दिखानेवाले है,'' कहते हुए जयशील टीले की ओर बढा। सिद्धसाधक, जयशील के पीछे-पीछे चला।

सर्पनख, कृपाणजित का पीछा करने लगा। उसे अब लगने लगा कि इन अरण्य वृक्षों में से उसका पीछा करते हुए उसे पकड पाना संभव नहीं है। वह चिल्ला-चिल्लाकर कृपाणजित से कहने लगा, ''अरे ओ कृपाणजित, रुक जाना। हम दोनों को मालूम नहीं कि मेरा भाई ज़िन्दा है या नहीं। तुम उसका जलाश्व मेरे हवाले कर दो और चले जाओ।''

''कैसे विश्वास करूँ कि जलाश्व को ले लेने के बाद तुम मुझे मार नहीं डालोगे? इसका यह मतलब नहीं कि मैं तुमसे लडने में डर रहा हूँ। युद्ध में जीत किसकी होगी, उस भगवान के सिवा कोई नहीं जानता। मगर मुझे पहले उस जयशील को खत्म करना है। फिर उसके बाद तुम्हारी ख़बर लूँगा,'' कहते हुए कृपाणजित अश्व को और तेज़ी से दौड़ाते हुए एक नदी के किनारे पहुँचा।

हो तो मर जाऊँगा। इसलिए अब तुमसे लडने का मेरा कोई इरादा नहीं है,'' कहकर वह अश्व को तेज़ी से दौड़ाने लगा।

सर्पनख ने अपनी हार नहीं मानी। वह उसका पीछा करने लगा। वृक्ष के पीछे छिपकर यह सबकुछ देखते और सुनते हुए जयशील ने सिद्धसाधक से कहा, ''भागनेवालों में से एक हमारा जानी दुश्मन है। दूसरे को अपना दोस्त बनाने पर हम माया सरोवर पहुँच सकते हैं।''

''तुमने सही सोचा। पर लगता है, ये दोनों हमारी आँखों से ओझल हो जायेंगे। कहो, अब क्या करें?'' सिद्धसाधक ने पूछा।

बौनों का सेनाध्यक्ष भी दूर पर खडे होकर आश्चर्य-भरे नेत्रों से यह सब कुछ देख रहा था। जयशील ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, ''सेनाध्यक्ष, भागे जा रहे उन दोनों को पकडना

सर्पनख ने भी अपने अश्व को तेज़ी से दौड़ाया और थोडी ही देर में वह भी नदी के किनारे पहुँचा। तट पर दौडे जा रहे कृपाणजित का वह पीछा करने लगा।

उस समय तक सचेत करते हुए बजायी जा रही डंकों की आवाज़ बौने जाति के लोगों ने सुन ली। उनमें से कुछ लोग कृपाणजित और सर्पनख का पीछा करने लगे और उन्हें रोकने की कोशिश की। उनके हाथों में भाले थे। कृपाणजित ने अपने पीछे दौड़े आ रहे बौनों को देख लिया। वह आगे नहीं जा सकता था और न पीछे भी, क्योंकि उसके आगे भाले लिये बौने खडे थे और पीछा कर रहा था, सर्पनख जो अपने भाई को पहुँचायी गयी हानि के लिए प्रतीकार लेने पर तुला था।

उस स्थिति में कृपाणजित को अश्व सहित नदी में कूदने के सिवा और कोई उपाय नहीं सूझा। ऐसा ही करने के लिए वह तट पर से अपने अश्व को नदी की ओर बढ़ाने लगा तो अचानक उसने देखा कि दो मगर नदी जल में तैर रहे हैं।

उन्हें देखते ही वह पसीने-पसीने हो गया। वह दुविधा में पड़ गया। सोचने लगा, ''छाती में चुभनेवाले भाले की चोट बेहतर है या जल में तैरते हुए मगरों का ग्रास बनना अच्छा है। छी, ये दोनों प्राणहारी हैं।'' यों सोचते हुए अब वह इस निश्चय पर आ गया कि मौत से बचना मुश्किल है। कोई चारा न पाकर उसने अपना धैर्य समेट लिया और निश्चय कर लिया कि इन बौनों व सर्पनख के हाथों नहीं मरूँगा और मरूँगा तो इन मगरों के मुँहों में। वह अपने ही आप बढ़ाव ढ़ाने लगा कि मैं अब जलाश्व पर सवार हूँ। जल में डूब जाने के बदले वह अपने प्राण की रक्षा का प्रयत्न करेगा और हो सकता है, अपनी साथ-साथ मेरी

भी रक्षा कर जाए। यों सोचकर वह अश्व सहित नदी में कूद पड़ा।

कृपाणजित के पीछे-पीछे आ रहे सर्पनख ने यह दृश्य देख लिया और कहने लगा, "अरे, यह तो बड़ा मूर्ख निकला। पर मुझे चुप नहीं रहना है। इसे मगर खा जाएँ तो खा लें, लेकिन इस जलाश्व को किसी भी हालत में मुझे बचाना होगा।" अगर मेरा भाई ज़िन्दा हो तो मायासरोवर पहुँचने के लिए यह अश्व ही एकमात्र आधार है।" कहते हुए वह भी अश्वसहित नदी में कूद पड़ा।

दोनों मगर उस कृपाणजित का पीछा करने लगे, जो नदी के प्रवाह के साथ-साथ अश्व सहित प्रवाहित होता जा रहा था। सर्पनख तलवार लिये उन्हें मार डालने के लिए उनका पीछा करने लगा। तट पर खड़े बौने लोग वहाँ पड़े पत्थर कृपाणजित पर बरसाने लगे। सर्पनख ऊँचे स्वर में उनसे कहने लगा, "मैं तुम लोगों का दोस्त हूँ। मैं इस दुष्ट को जीवित पकड़ने जा रहा हूँ। उसे पत्थरों से मत मारो।" यह कहते समय जब उसने देखा कि एक मगर जब अपना मुँह फैलाये कृपाणजित का पाँव पकड़ने जा रहा है तो उसने उसकी पीठ पर तलवार से ज़ोर से वार किया।

इस वार से मगर बहुत घायल हो गया। वह पानी में छटपटाने लगा। दूसरा मगर नदी के नीचे जाकर मुँह खोले कृपाणजित की ओर बढ़ने लगा। उसे देखकर जलाश्व डर गया। कृपाणजित लगाम को कसकर खींचता हुआ उसे रोकने की कोशिश करने लगा, पर वह बिना रुके नदी तट की ओर तैरते हुए तेज़ी से जाने लगा। प्राणों को हर लेनेवाले एक मृत्यु वृक्ष की ओर वह बढ़ता हुआ किनारे पर आया।

उस मृत्यु वृक्ष से थोड़ी दूरी पर खड़े बौनों की जातिवाले ज़ोर से चिल्लाने लगे, "अरे ओ बलवान, अपने घोड़े को लौटाओ। नहीं तो तुम्हें यह वृक्ष खा जायेगा।" उन्होंने यों कृपाणजित को सावधान किया।

पर अश्व को रोकना उससे नहीं हो पा रहा था। वह मृत्यु वृक्ष के नीचे आ गया। मृत्यु वृक्ष की एक शाखा ने कृपाणजित को कसकर पकड़ लिया और उसे ऊपर खींचने लगी। *(सशेष)*

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

गलती जनता की है

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया और शव को नीचे उतारा। उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, देख रहे हो, उस श्मशान को? कितना भयंकर लग रहा है! कितनी बार तुम यह काम कर चुके हो! मेरे समझाने-बुझाने के बाद भी उसी काम पर लगे रहते हो। मैं पूछता हूँ, क्या आज तक कभी तुम्हें सफलता मिली? इस परिश्रम से कोई लाभ हुआ? तुममें तो हठ दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। राज्य-भार को भी छोड़कर यहाँ व्यर्थ प्रयास करते हुए समय गंवा रहे हो। हाँ, मैं मानता हूँ कि तुम अद्‌भुत साहसी हो, तुममें असीम सहनशक्ति है,

लक्ष्य साधने की धुन है, पर क्या फ़ायदा? आख़िर तुम क्या पा सके? मेरी समझ में नहीं आता कि आख़िर वह समस्या क्या है, जिसके हल के लिए इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो? पहले विक्रमसिंह नामक एक राजा था। उसने अपना राज्य-भार किसी कुशल शासक को सुपुर्द करना चाहा। पर वह उसमें विफल हुआ। मुझे लगता है कि उसी की तरह तुम भी विफल होओगे। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर बेताल कहानी यों सुनाने लगा :

विक्रमसिंह विशालदेश का राजा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। वह प्रजा को ही अपनी संतान मानता था। उसे इस बात की भी चिंता नहीं थी कि वह संतानहीन है। परंतु देश के नागरिकों को इस बात की चिंता थी कि पता नहीं, विक्रमसिंह की मृत्यु के बाद कौन राजा बनेगा और वह कैसा होगा। कुछ प्रमुख नागरिक राजा से मिले और कहा, ''प्रभु, आप किसी योग्य चिरंजीवी को गोद ले लीजिए, अभी से उसे योग्य शिक्षा दीजिए। तब जाकर वह आप जैसा उत्तम राजा बन पायेगा।''

जब विक्रमसिंह ने ये बातें सुनीं तब उसे लगा कि राजा बनने के लिए यह कोई ज़रूरी नहीं कि मेरी ही संतान यह कर्तव्य निभाये। किसी को अच्छी शिक्षा देना और उसे योग्य बनाना मात्र पर्याप्त है। उसने यह बात रानी से बतायी तो उसे भी यही ठीक लगा। दोनों ने एक-दूसरे से परामर्श किया और इस निर्णय पर आये कि इसके लिए समर्थ युवकों को चुना जाए। घोषणा की गयी कि ऐसे युवक आगे आयें। उस घोषणा को सुनकर कितने ही युवक राजधानी आये। महाराज ने स्वयं उनकी परीक्षा ली। आख़िर सुशाल और कुशाल नामक दो युवक चुने गये, जो दूसरे युवकों से अधिकाधिक समर्थ साबित हुए।

दोनों में से एक ही को चुनना था। यह काम राजा के लिए कठिन हो गया। राजा ने उन दोनों से कहा, ''तुम दोनों हर विषय में समान हो। कोई किसी से कम नहीं है। परंतु तुम दोनों में से कोई एक ही विशाल राज्य का राजा बन सकता है। राजा बनना कोई साधारण बात नहीं है। राजा भगवान के समान है। तुम दोनों कितनी ही विद्याओं में पारंगत हो। मानव से संभव सभी विद्याएँ तुम दोनों सीख चुके हो। दैवशक्ति पाकर चंद और विद्याएँ सीखकर आओ। एक साल के बाद तुम दोनों में से जिसे भगवान की कृपा

अधिकाधिक प्राप्त होगी, उसे इस राज्य का राजा बनाऊँगा। अब तुम जा सकते हो।'' सुशाल और कुशाल समीप के अरण्य में गये और घोर तपस्या की। साल पूरा हो, इसके पहले ही भगवान प्रत्यक्ष हुए और वरदान माँगने के लिए कहा।

''मेरे देश में प्रजा सुखी रहे,'' सुशाल ने कहा।

भगवान प्रसन्न हुए और बोले, ''पुत्र, तुम्हारी मेधाशक्ति अद्‌भुत होगी। उसके बल पर किसी भी क्लिष्ट समस्या का समाधान ढूँढ पाओगे। प्रकृति ऋतुधर्म का पालन करेगी। किसी भी रोग को चंगा करने की शक्ति रखनेवाले वैद्य तुम्हारे राज्य में होंगे। तुम्हें तो राजा बनना है। तभी मेरे वरदान फलेंगे।''

फिर भगवान कुशाल के सामने प्रत्यक्ष हुए। तब कुशाल ने कहा, ''मेरी प्रजा मेरी बात को शिला समान माने। जो भी मेरा विरोध करेंगे, उनका सर्वनाश करने की शक्ति मुझे प्राप्त हो। जो मेरा विश्वास करेंगे, वे सदा आनंद में डूबे रहें।''

''तथास्तु ! परंतु मेरे दिये जानेवाले वरदान तभी फलीभूत होंगे, जब तुम राजा बनोगे। मेरे वरदान तुम्हारे और तुम्हारे देश तक ही सीमित होंगे।'' यों कहकर भगवान अदृश्य हो गये।

कुशाल व सुशाल दोनों राजधानी लौटे। वे राजा विक्रमसिंह से मिले। उन दोनों ने अपनी-अपनी तपस्या और प्राप्त वरदान के बारे में बताया। पूरी बात सुनने के बाद राजा ने कहा, ''किसी भी देश के राजा को चाहिए कि वह अपनी प्रजा को अपनी संतान माने। शत्रुओं का नाश करने की शक्ति भी उसमें भरपूर हो। पर तुम दोनों में राजा के आधे-आधे लक्षण मात्र हैं। तुम दोनों

में से एक को राजा बना सकता हूँ और दूसरे को सेनाध्यक्ष। परंतु ये शक्तियाँ तभी काम में आयेंगी, जब तुम राजा बनोगे। तुम दोनों की शक्तियाँ एक साथ देश के लिए उपयोग में आयें, यह हो नहीं सकता। और यह बात मुझे नहीं जंची। इस बीच तुम दोनों जनता के साथ रहो, उनके साथ घूमो-फिरो। उनसे बताते रहना कि तुम उनके लिए क्या-क्या कर सकते हो। उनके प्रेमपात्र बनो।

राजा के कथनानुसार सुशाल और कुशाल जनता के बीच में गये। विक्रमसिंह ने राज्य-भार मंत्रियों को सौंप दिया और पास ही के जंगल में चला गया। तीन महीनों तक उसने घोर तपस्या की, तब जाकर भगवान प्रत्यक्ष हुए। वे राजा के दुख को जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा, ''पुत्र, सुशाल अच्छा युवक है तो कुशाल बुरा। अपनी बुद्धि के अनुसार ही उन्होंने वर माँगे। उनकी तपस्या पर प्रसन्न होकर मैंने उन्हें बरदान प्रदान किये।''

विक्रमसिंह ने तब पूछा, ''लोकपालक, अच्छे व्यक्ति की इच्छाएँ आपने पूरी कीं, ठीक है, परंतु बुरे कुशाल की इच्छाएँ क्यों पूरी कीं?''

''मेरे लिए उनकी नियमबद्धता, निष्ठा प्रधान है, उनकी अच्छाई-बुराई से मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। उनमें से किसे राजा बनाना है, इसका निर्णय प्रजा पर छोड़ दो। वे ही इस विषम समस्या का निर्णय कर सकेंगे। प्रजा में भी अच्छे और बुरे लोग होते हैं। अपने विशाल देश को दो भागों में बाँट दो। सुशाल को जो चाहेंगे, वे एक भाग में रहेंगे और कुशाल को चाहनेवाले दूसरे भाग में। वे अपने-अपने भाग के राजा बनेंगे। अब तुम्हारी समस्या का हल हो गया न? अब रही जनता की समस्या। वे अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार दोनों में से किसी को अपना-अपना राजा चुनेंगे। इसलिए अपने निर्णय का फल उन्हें भुगतने दो। तुम चिन्तामुक्त हो जाओ।''

विक्रमसिंह ने सोचा कि भला कौन ऐसे लोग होंगे, जो बुरे आदमी को अपना राजा बनायें। परंतु भगवान के उपदेश के अनुसार राजधानी लौटते ही उसने सुशाल और कुशाल को राजा घोषित किया। अधिक संख्या में लोगों ने सुशाल को अपना राजा माना तो कम संख्या में लोगों ने कुशाल को अपना राजा बनाया। जनसंख्या के आधार पर बड़ा भाग सुशाल को और छोटा भाग कुशाल को सौंपा गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा, ''राजन्, विक्रमसिंह ने जो निर्णय लिया, उसमें मेरे दो संदेह

हैं। विक्रमसिंह जनता को अपनी संतान मानता था। प्रजा-क्षेम को ही मुख्य मानते हुए तपस्या करके जिस सुशाल ने भगवान से वरदान पाया, उसे ही पूरे राज्य का भार संभालना चाहिए था। पर महाराज ने ऐसा नहीं किया। क्या उसका व्यवहार विचित्र नहीं लगता? अब रही भगवान के दिये वरदान की बात। वरदान पाने के लिए चाहिये निष्ठा भरी तपस्या, न कि उनके गुण। क्या भगवान का ऐसा मानना सही है? मेरे संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''किसी भी देश की प्रजा को सुख-शांति भरे वातावरण में जीवित रहना हो तो आवश्यकता होनी चाहिए एक ऐसे राजा की, जिसका लक्ष्य हो प्रजा की सेवा, परन्तु उसमें शत्रु का नाश करने की शक्ति भी होनी चाहिए। ये दोनों गुण उसमें होने चाहिए। सुशाल व कुशाल में ये गुण आधे-आधे ही हैं। हो सकता है, सुशाल राजा घोषित किया जाए तो कुशाल उग्र होकर, दुर्बुद्धि के बश होकर सुशाल की हत्या कर दे। इसीलिए राजा ने भगवान की सलाह का पालन किया। अब रही वरदानों की बात। भगवान ने उनके बारे में जो कहा, वह अक्षरशः सच है। दुष्ट चाहे नियम और निष्ठा के साथ क्यों न कठोर तपस्या करें, पर उसके फल उन्हें कष्ट पहुँचाते हैं। किसी भी हालत में वे उनकी भलाई नहीं करते। दुष्ट स्वभाववाले दुष्ट वरदान ही माँगते हैं। आख़िर वे ही उनका सर्वनाश करते हैं। पुराण भी यही सत्य बताते हैं। किन्तु ऐसे दुष्टों से जनता को बचाना, उनसे दूर रहना शासकों की जिम्मेदारी है। इसीलिए भगवान ने विक्रमसिंह को सलाह दी कि इसका निर्णय करने की जिम्मेदारी प्रजा पर छोड़ दो। अधिक संख्या में जो अच्छे लोग हैं उन्होंने सुशाल को अपना राजा चुना और अल्प संख्या में जो बुरे लोग हैं, उन्होंने कुशाल को पसंद किया। मनुष्यों के स्वभाव ही उनकी अच्छाई-बुराई के निर्णायक हैं। उनके अनुसार ही उन्हें सुख-दुख प्राप्त होते हैं। भगवान प्रदत्त वरदान सर्वथा न्यायोचित होते हैं।''

राजा के मौन को भंग करने में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा। *(सुचित्रा की रचना के आधार पर)*

भारत की पौराणिक कथाएँ – ७
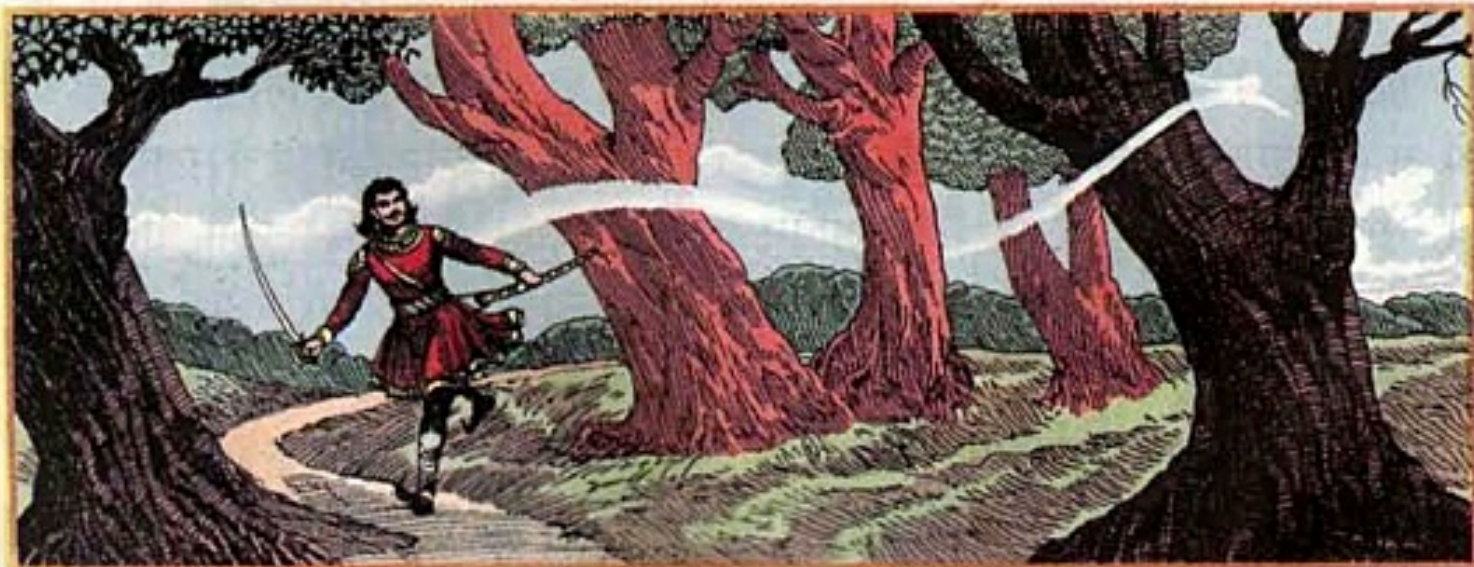
जब देवता बूढ़े हो गये

दुर्वासा ऋषि क्रोध के लिए बदनाम थे। जब भी उन्हें किसी पर क्रोध आता या किसी परिस्थिति से उन्हें कुछ परेशानी होती तो वे झट शाप दे देते। और उनकी योग शक्ति इतनी प्रबल थी कि उनके शाप का कोई दूसरी शक्ति निराकरण नहीं कर सकती थी, ऋषि स्वयं भी नहीं कर सकते थे।

फिर भी, वे अपने शाप को सुधार सकते थे अथवा उसके प्रभाव को कम कर सकते थे। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि अंतिम विश्लेषण करने पर उनके शाप वरदान सिद्ध होते थे।

यद्यपि हमलोग सभी ईश्वरीय शक्तियों के लिए ईश्वर या देव शब्द का प्रयोग करते हैं, फिर भी, वे सभी एक ही कोटि के नहीं हैं। कुछ महान देव हैं, जैसे-विष्णु, शिव तथा ब्रह्मा। विष्णु के अनेक अवतार हुए हैं, जैसे – राम और कृष्ण। लेकिन देवों का एक ऐसा वर्ग है जो सदा प्रसन्न चित्त, शक्तिशाली एवं करुणामय है।

विष्णु तथा उनके अवतारों के विपरीत मनुष्यों के साथ उनका उतना संबंध नहीं था, यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर वे सहायक सिद्ध होते थे। कई युगों तक वे मनुष्यों और देवों के समान रूप से शत्रु असुरों से युद्ध करते रहे। इनके राजा इन्द्र थे। वे जरा और मृत्यु से परे थे।

एक बार ऋषि दुर्वासा इन्द्र के देवलोक में घूमने गये। वहाँ की एक अप्सरा ने आदर और

प्रेम के साथ उनका स्वागत किया और उन्हें एक विस्मयकारी माला भेंट की। वह भेंट चमकीले रंग और सुगंध में अद्वितीय थी। ऋषि दुर्वासा को वह भेंट बहुत पसंद आई। लेकिन तपस्वी होने के कारण वे किसी वस्तु से आसक्त होना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने माला इंद्र को भेंट कर दी। इंद्र बहुत प्रसन्न हुए।

कुछ समय के बाद जब ऋषि दुर्वासा पृथ्वी पर वापस जाने लगे तब इंद्र उन्हें अपने स्वर्गीय महल के मुख्य द्वार तक छोड़ने गये। उन्हें विदा कर इंद्र अपने वाहन एरावत को देखने गये जो वहीं खड़ा था। अचानक उन्हें लगा कि माला हाथी के गले में अधिक शोभायमान लगेगी और हाथी तेजस्वी दिखाई पड़ेगा। इसलिए उन्होंने माला से हाथी को विभूषित कर दिया। ऐरावत बहुत प्रसन्न दिखाई पड़ा। इंद्र ने अपने वाहन के रूप की प्रशंसा की और वे फिर अपनी राजय सभा में चले गये।

शीघ्र ही माला की सुगंध से आकृष्ट होकर मधुमक्खियों का एक झुण्ड हाथी पर मंडराने लगा। ऐरावत ने तंग आकर माला को तोड़कर फेंक दिया। मधुमक्खियों से उसे छुटकारा मिल गया।

दुर्भाग्यवश इस बात को ऋषि दुर्वासा तक तोड़-मरोड़ कर पहुँचाया गया। उन्होंने समझा कि इंद्र ने उनकी भेंट को महत्वहीन समझकर उसे अपने हाथी को पहना दिया, जिसने उसे तोड़-ताड़कर फेंक दिया। इसे उन्होंने अपना अवमान समझा।
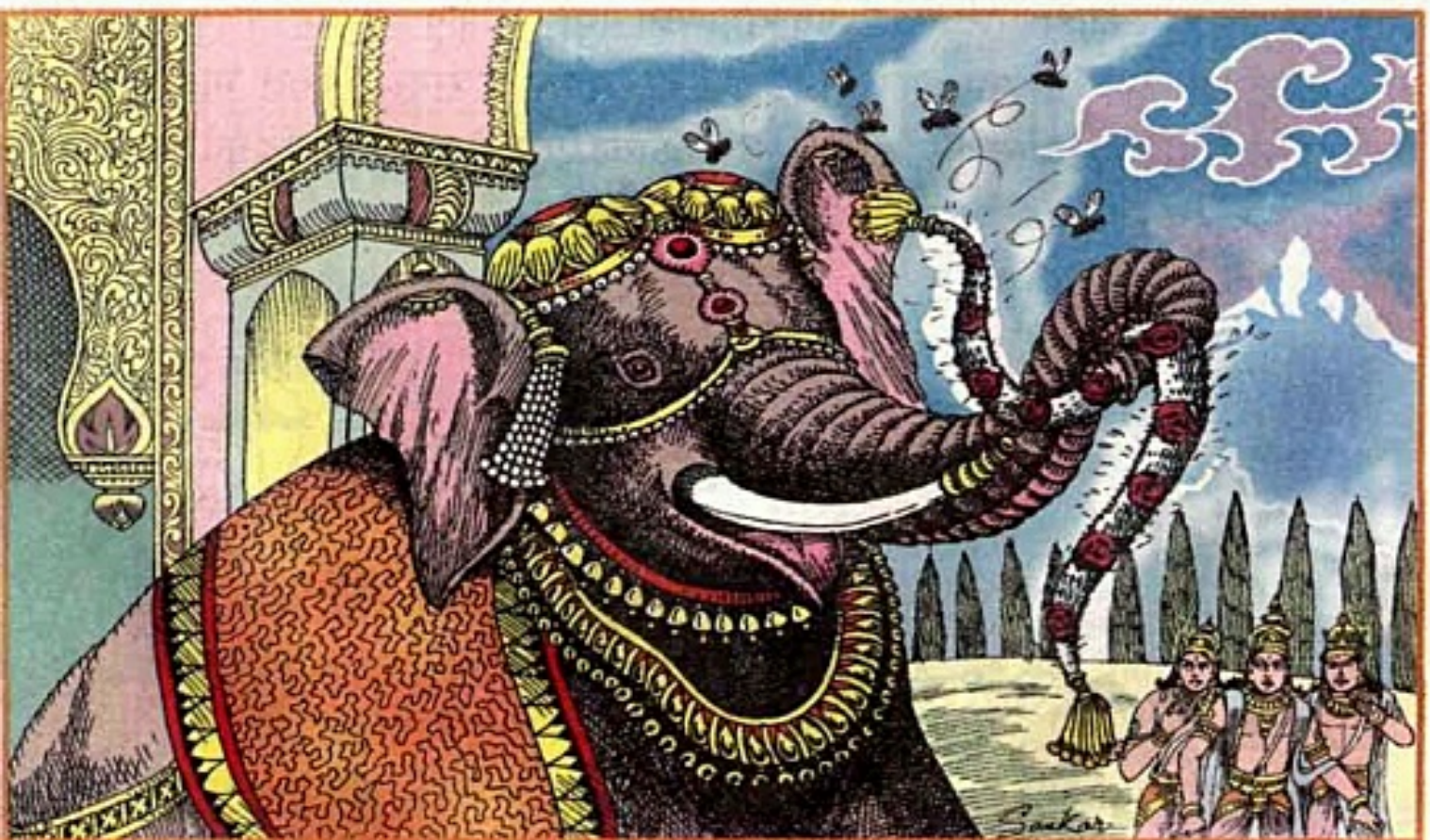
''अरे देवताओ ! तुम्हें अपने चिर यौवन का अहंकार है न ! अब तुम्हें यह छोड़ देगा और मनुष्यों के समान तुम भी जरायु बन जाओगे।'' देवताओं के राजा इंद्र की धृष्टता के कारण शाप देते हुए ऋषि ने क्रोध में कहा।

''हे महामुनि ! आपने यह क्या कर दिया?'' अनेक मुनियों ने जिन्होंने शाप देते हुए सुना, आर्त पुकार की। ऋषि ने स्वयं अनुभव किया कि उसके शाप से पृथ्वी खतरे में पड़ जायेगी, क्योंकि मानवों के समान देवताओं के जरायु होने से शक्तिशाली असुर उन्हें विनष्ट कर देंगे।

और पृथ्वी पर असुरों का राज्य होने के कारण मानवों का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। असुर असभ्य और अत्याचारी थे। वे मनुष्यों को प्रकाश और सत्य के मार्ग पर चलने की स्वाधीनता कभी नहीं प्रदान करेंगे।

''लेकिन देवगण पुनः उस अमृत के पान से जरायु से मुक्त होकर अमर हो जायेंगे जो क्षीरसागर के मंथन से प्रकट होगा।'' ऋषि दुर्वासा ने क्रुद्ध मुनियों से कहा।

निराश देवताओं को आशा की एक किरण दिखाई पडी। लेकिन क्षीरसागर का मंथन कैसे होगा? सिर्फ़ देवताओं के बस की बात नहीं थी। इसके लिए असुरों का सहयोग आवश्यक था। अमृत में भागीदारी के लालच में समुद्र मंथन में सहयोग देने के लिए वे तैयार हो गये। लेकिन यह भिन्न कथा है।

ऐरावत माला के प्रति किये अपने आचरण पर दुखी और लज्जित था। देवताओं के सामने आने के भय से वह क्षीर सागर में जाकर छिप गया।

जो भी हो, सागर-मंथन से वह भी बाहर आ गया। लेकिन अब वह बिलकुल श्वेत था। वह सागर के सबसे निचले भाग में रहने के कारण ऐसा हो गया। वह इंद्र का फिर से वाहन बन गया।

सारा संसार ही एक मंच है !

पी. पवनकुमार
बेल्लरी

अर्चना जगतप
सांगली

परिषद भवन में सभी लोग चुपचाप थे। वे थे - मरुतनाडु के राजा महेन्द्रसर्बमन, उनका पुत्र विजयादितन और मंत्री मतिवनन। वहाँ एकत्र होने का कारण यह था कि महेन्द्रबर्मन को अपने युवराज पुत्र से आशा थी कि वह राज्य का उत्तरदायित्व संभाल लेगा, किंतु युवराज ने अपने पिता के इस अनुरोध को ठुकरा दिया था।

"लेकिन तुम राजा क्यों नहीं बनना चाहते?" महेन्द्रवर्मन ने पूछा। राजकुमार ने निर्भयता से उत्तर दिया, "मैं प्रशासन की भ्रष्ट राजनीति के पचड़े में नहीं पड़ना चाहता। मैं एक महान अभिनेता बनना चाहता हूँ।"

राजा चुप रहा। "तुम अपने कर्त्तव्य से नहीं भाग सकते। भूमि पर शासन करना क्षत्रिय धर्म है। मैं चकित हूँ कि तुममें अभिनय के प्रति कैसे रुचि हो गई!" मंत्री ने कहा।

"ओह ! अभिनय हमें कल्पना के संसार में ले जाता है। मंच पर अपने प्रदर्शन से लोगों को आनंद देना मेरे जीवन की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा है। मैं 'कलईमगल आर्ट गैलरी' द्वारा संचालित नाट्य कार्यशाला में भाग लेने की योजना बना रहा हूँ। अतः आप हमारे छोटे भाई जयन्तन को क्यों नहीं राज्य का भार सौंप देते?" विजयादितन ने प्रत्युत्तर दिया।

इस उत्तर पर महेन्द्रवर्मन आगबबूला हो उठा। "अरे मूर्ख ! इस राज्य पर शासन करने के लिए तुम्हें प्रशिक्षित किया गया है। क्या अभिनय में
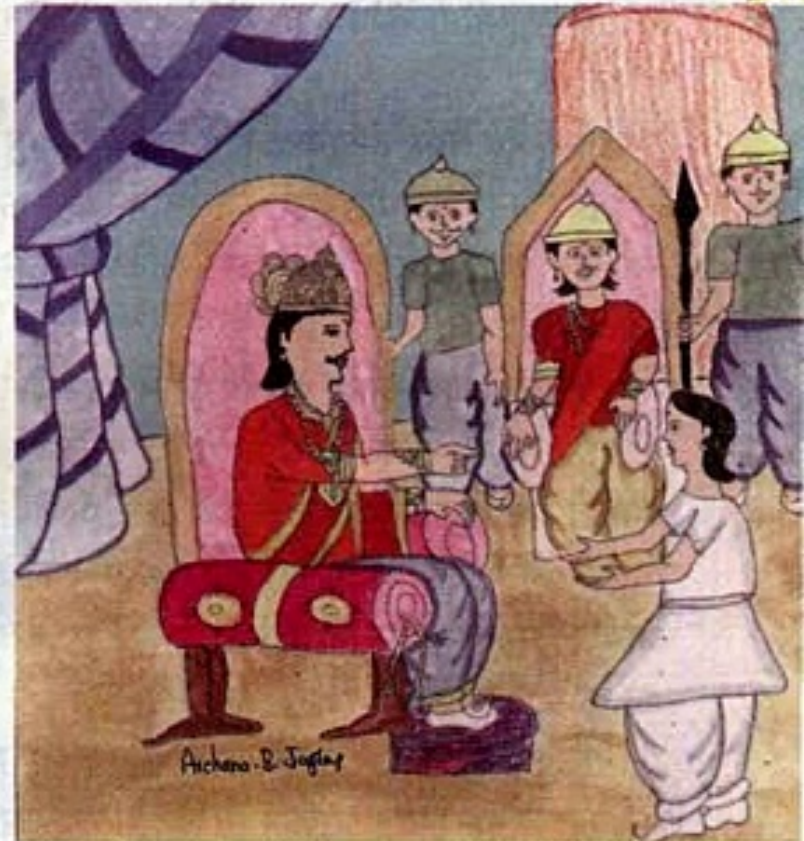
समय नष्ट करने में शर्म नहीं आती?"

मतिवनन ने राजा को शांत करने के लिए हस्तक्षेप किया। "महाराज ! क्या राजकुमार

को इस पर विचार करने के लिए कुछ समय नहीं देना चाहिए।'' राजा सहमत हो गये।

दो दिनों के पश्चात वे तीनों परिषद् भवन में पुनः एकत्र हुए थे। राजकुमार अपने हठ पर अड़ा था। मतिवनन ने कहा, ''राजकुमार, तुम्हारे पिता 'कलईमगल आर्ट गैलरी' की कार्यशाला में तुम्हारे भाग लेने पर सहमत हो गये हैं। बदले में वे तुमसे कुछ सहायता की अपेक्षा करते हैं।''

राजकुमार यह सुनकर बाग-बाग हो गया और इसके बदले अपने पिता के लिए कुछ भी करने को तैयार हो गया। राजा ने कहा, ''पुत्र, मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ दिनों के लिए कोटैयूर प्रांत का शासन संभाल लो।''

राजकुमार तैयार हो गया और अविलंब कोटैयूर के लिए रवाना हो गया। वहाँ राजसभा में जाने के लिए जब तैयार हो रहा था तब एक सैनिक ने उसे एक पत्र दिया।

यह पत्र राजा से आया था और उसमें यह संदेश था कि रानी को साँप ने डँस लिया है। राजकुमार मर्माहत और किंकर्त्तव्यविमूढ-सा हो गया, पर मात्र थोडी देर के लिए। तभी कोटैयूर का एक अधिकारी आया। उसने बताया कि दरबारी उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

राजकुमार दरबार में मुस्कुराता हुआ गया मानों सब कुछ सामान्य था। उसका सारा दिन प्रांत संबंधी अनेक समस्याओं को सुलझाने में बीत गया।

अगले दिन प्रातः काल विजयादितन महल के उद्यान में टहल रहा था। तभी एक अधिकारी राजकुमार के हस्ताक्षर के लिए कुछ प्रपत्र लेकर आया। ''ये कागजात राज्य के अनेक भागों में झीलें खुदवाने के लिए दस हजार स्वर्ण मुद्राओं की स्वीकृति के संबंध में हैं।'' उसने कहा।

''इतने धन से तुम कितनी झीलें खुदवा सकते हो?'' विजयादितन ने जानना चाहा।

''आप चिंता न करें राजकुमार! हम लोग बराबर आपके पिता को कर की अदायगी करते आ रहे हैं।'' अधिकारी ने कटुतापूर्वक उत्तर दिया। ''यह धन पाँच झीलों के लिए पर्याप्त होगा।''

विजयादितन ने अपने क्रोध को दबाते हुए कहा, ''पिछले वर्ष तुमने दस लाख स्वर्ण मुद्राएँ कर के रूप में अदा किया और तीन लाख स्वर्ण मुद्राओं का हम लोगों से ऋण लिया। क्या तुम यह भूल गये।'' अधिकारी चुप रह गया।

उस रात विजयादितन को पिता से एक और पत्र मिला। उस पत्र में संदेश यह था कि माँ खतरे से बाहर है और स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो रहा है। विजयादितन ने राहत की साँस ली और वह उस रात शांतिपूर्वक सोया। लेकिन शीघ्र ही खतरे का संकेत दिया गया और राजकुमार को नींद से जगाया गया। निकट के जंगल से कुछ डाकू नगर में घुस आये थे। वे मशाल लेकर लूट-पाट कर रहे थे।

राजकुमार को आश्चर्य हुआ। ''डाकू मशाल लेकर चाँदनी रात में लूटपाट कर रहे हैं? जरूर वे अधकचरे होंगे।'' उसने कहा। एक घण्टे के अंदर उसने डाकुओं को घेरकर पकड़ लिया और जेल में बंद कर दिया।

अगले दिन सवेरे विजयादितन को पिता से तीसरा संदेश मिला कि मरुतनाडु के लिए तुरंत रवाना हो जाओ।

मंत्री मतिबनन विजयादितन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। ''राजकुमार, 'कलईमगल आर्ट गैलरी' जाने के लिए सारी व्यवस्था कर दी गई है।'' उसने कहा।

''धन्यवाद मंत्री! मैंने कोटैयूर पहुँचते ही राजा का बेश धारण कर लिया था। और मैंने उसकी भूमिका बिना किसी बनावट, संवाद, पूर्वाभ्यास, यहाँ तक कि बिना मंच और प्रकाश योजना के पूर्ण रूप से निभायी।

''अब मैं समझता हूँ कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति और उससे भी अधिक एक राजा प्रत्येक क्षण जीवन का एक मुखौटा पहनता है। मैं अनुभव करता हूँ कि यह वास्तविक जीवन और दिन प्रतिदिन का अभिनय मेरी तीव्र आकांक्षा को संतुष्टि प्रदान करेगा।

''अब मुझे अभिनय के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। और रंगमंच से कहीं अधिक मेरे पिता का दरबार वह स्थान है जहाँ मुझे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना चाहिए। मैं, जैसा मेरे पिता चाहते हैं शासन की बागडोर संभालूँगा।'' विजयादितन ने कहा।

कमरे में प्रवेश करते समय महेंद्रवर्मन अपने बेटे की बात सुन रहा था। वह विजयादितन के हृदय-परिवर्तन पर बहुत प्रसन्न था। उसने उसे गले लगाते हुए कहा, ''तुम्हारा राज्याभिषेक एक सप्ताह में हो जायेगा।

राजा और मंत्री ने एक रहस्यमय मुस्कान का आदान-प्रदान किया जिसे राजकुमार ने नहीं देखा।

धरती फिर मुस्कुरा पड़ी!

सोमनाथ बारीक
जजपुर

विक्रमपुर का राजा विक्रमभानु सारा समय आमोद-प्रमोद में व्यतीत करता था। आश्चर्य नहीं यदि उसे यह नहीं मालूम था कि उसकी प्रजा की हालत क्या है या उनकी समस्याएँ क्या हैं।

एक दिन उसे खबर मिली कि उसके राज्य में प्रजा भूखी मर रही है क्योंकि खाने के लिए अन्न नहीं है। ''राज्य का सारा अनाज कहाँ चला गया?'' राजा ने मंत्री से पूछा।

''महाराज ! वर्षा नहीं हुई। इसलिए फसल नहीं हुई। इसलिए प्रजा के पास खाने के लिए अन्न नहीं है।'' मंत्री ने बताया।

''लेकिन बादलों को क्या हो गया? वर्षा क्यों नहीं हुई? वर्षा कैसे लाई जाये?'' राजा ने पूछा। मंत्री के पास कोई उत्तर नहीं था।

''यह घोषणा करा दी जाये कि जो भी समस्या का समाधान बतायेगा, जो भी वर्षा लाने का मार्ग सुझायेगा, उसे सोने की सौ अशर्फ़ियाँ पुरस्कार में दी जायेंगी।

घोषणा करा दी गई। लेकिन कौन बता सकता है कि वर्षा कैसे होगी? राधू किसान के पास एक छोटा बाग था। वह अपने बाग की देखभाल अच्छी तरह करता था। उसके वृक्ष और पौधे आस-पास के पेड़ों से अधिक हरे-भरे और मनोरम लगते थे।

एक दिन जब राधू अपने बाग में काम कर रहा था तब तोतों की एक जोडी उसके निकट आकर हरी कोमल घास पर बैठ गई। ये पक्षी थके-थके और चिंतित लग रहे थे। राधू की नज़र जैसे ही उनपर पड़ी, एक ने कहा, ''मित्र, क्या तुम्हारे तालाब का पानी पी सकते हैं। हम लोग बहुत प्यासे हैं।''

''ओ मधुर नन्हें पंछी! अपनी प्यास बुझाने

किशोर कुमार सिंह
मयूरभंज

के लिए तुम्हारा स्वागत है।" राधू ने कहा।

दोनों तोतों ने जी भर पानी पीया और राधू को धन्यवाद दिया। फिर वे एक पेड़ की शाखा पर बैठ गये।

एक तोते ने कहा, "कैसी विचित्र बात है कि पानी भी दुर्लभ हो गया है !"

"इसमें विचित्र क्या है? क्योंकि जंगलों का अभाव है, गाँवों में पेड़ों की कमी है, इसलिए बादल नहीं आते और ऊपर से गुजर जाते हैं। धरती में जलस्तर नीचे चला गया है क्योंकि उसे ऊपर लाने के लिए पेड़ों की जड़ें नहीं हैं।" एक दूसरे तोते ने अपना विचार व्यक्त किया।

"क्या ऐसा होता है?" उसके साथी ने पूछा।

"ऐसा ही होता है। जानते हो इस भले किसान का तालाब क्यों नहीं सूखा? क्योंकि इसने इसके चारों ओर लगाये अपने बाग की देख-रेख भली भाँति की है।"

"इसका अर्थ यह है कि जब तक लोग एक ओर वृक्षों को काटना बंद नहीं करेंगे और दूसरी ओर नये वृक्ष लगाना आरंभ नहीं करेंगे, तब तक सूखे की समस्या का समाधान नहीं होगा।" पहले तोते ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो।" दूसरे तोते ने कहा। फिर दोनों उड़ गये। राधू उसी दिन राजा से मिला और दोनों तोतों के संवाद के विषय में उन्हें बताया। राजा ने इसकी प्रशंसा की। उसने घोषणा के अनुसार राधू को पुरस्कार दिया। उसने कानून बनाकर वृक्ष काटना बंद करवा दिया। उसने राज्य में हरेक वयस्क के लिए हरेक दिन एक वृक्ष लगाना अनिवार्य कर दिया। नियम की अवज्ञा करनेवालों के लिए सजा तय कर दी गई।

प्रजाजनों ने भी अनुभव किया कि राजा का आदेश उन्हीं के कल्याण के लिए है। इसलिए उन्होंने इसका कठोरतापूर्वक पालन किया। शीघ्र ही परिस्थिति में परिवर्तन आया। मौनसून में पर्याप्त वर्षा हुई। हरी-भरी फसलों से धरती पुनः मुस्कुरा पड़ी।

असंतोष दुख का कारण

पी. कविता
मदुराई

अजय और विजय गहरे मित्र थे। वे दोनों बारहवीं कक्षा में पढ़ते थे। वे प्रतिदिन एक साथ पैदल अपने स्कूल जाते। उनके माता-पिता गरीब थे। उन्हें आशा थी कि उनके बेटे ध्यान से पढ़ेंगे और अच्छी नौकरी ढूँढ़कर परिवार का भरण-पोषण करेंगे।

फिर भी, दोनों मित्रों के स्वभाव अलग-अलग थे। अजय के पास जो कुछ था उससे वह संतुष्ट रहता था। लेकिन विजय को आसानी से संतोष नहीं होता था। जब उसे इडली मिलती तो वह डोसा

माँगता। जब डोसा दिया जाता तो पूरी माँगने लगता। पूरी खाते-खाते उसे पोंगल खाने का मन करने लगता।

एक दिन स्कूल जाते समय विजय ने कहा, ''अजय, कितना अच्छा होता यदि हमलोग ऑटो से स्कूल जाते।''

''लेकिन हमलोग तो स्कूल के पास ही रहते हैं। ऑटो से जाने की आवश्यकता क्या है?'' अजय ने कहा।

''यदि हम ऑटो से जायें तो हमारे मित्र हमें बड़ा आदमी समझेंगे। क्या यह पर्याप्त नहीं है?'' विजय ने कहा।

''हम अपने माता-पिता के बारे में सोचें! क्या वे ऑटो के पैसे दे सकते हैं?'' अजय ने कहा। लेकिन विजय नहीं सहमत होता। किसी तरह उसने ऑटो से स्कूल जाने के लिए अपने माता-पिता को मना लिया।

अजय ने देखा कि ऑटो के अन्य लड़के बदमाश हैं। उसने अपने मित्र को सावधान किया, ''विजय, वे लड़के उपद्रवी हैं। उनके साथ दोस्ती से बचो।''

''तुम मुझसे ईर्ष्या करते हो। इसीलिए ऐसा कह रहे हो।'' विजय ने चिल्लाते हुए कहा।

''नहीं, मैंने उन्हें सिगरेट और शराब पीते देखा है। मैं तुम्हारे लिए सचमुच चिंतित हूँ। मेहरबानी करके उनसे बचो।'' अजय ने समझाया।

विजय को अपने मित्र की बात अच्छी नहीं लगी। ''सिगरेट और शराब पीने में भला क्या बुराई है? जिन्दगी में मजे लेने का यही तो समय है। मुझे नसीहत न दो। चले जाओ यहाँ से।'' विजय ने कहा।

किशोर कुमार सिंह
मयूरभंज

विजय को अपने नये दोस्तों के साथ अच्छा लग रहा था। "आज रात को पार्टी है। भूलना नहीं।" एक लड़के ने विजय से कहा।

शीघ्र ही विजय अपने नये मित्रों के साथ गुप्त पार्टियों में जाने लगा। क्रमशः वह नशीली दवाइयाँ भी लेने लग गया।

जब भी उसके माता-पिता स्कूल और पढ़ाई के विषय में बातचीत करते तब वह झूठ बोल देता था। वह भूल गया कि उसके माता-पिता उसके भविष्य के बारे में बड़े-बड़े सपने देख रहे हैं। विजय को माता-पिता के साथ झूठ बोलने में तनिक भी परेशानी नहीं होती थी।

एक दिन और दिनों की तरह विजय और उसके दोस्त स्कूल के सामने बस स्टॉप पर खड़े थे। वे विद्यार्थियों और अध्यापकों का बस में पीछा करते और दूसरों का पाकेट मार लेते। वे इस प्रकार बस में जितनी चोरी कर सकते थे, करते थे ताकि वे नशीली दवाइयों पर अधिक से अधिक खर्च कर सकें।

उस दिन भी वे एक बूढ़ी औरत का पाकेट मार रहे थे। उस बूढ़ी औरत को इसका पता चल गया और वह लड़कों के झुण्ड को देखकर इतना डर गई कि वह बस से कूद पड़ी और आहत हो गई।

विजय और उसका गिरोह भागने लगा लेकिन राहगीरों ने पीछा कर उन्हें पकड़ लिया और उनकी खूब पिटाई की। विजय के माता-पिता अपने बेटे की करतूत सुनकर बहुत दुखी और शर्मिन्दा हुए।

जब अजय को यह मालूम हुआ तो वह अपने मित्र से मिलने दौड़ा हुआ आया। विजय उसे देखकर फूट पड़ा, "मैंने तुम्हारी सलाह नहीं मानी। और मैं चोर और ड्रग का आदी हो गया हूँ। अब मेरा क्या होगा? मेरे माता-पिता को मेरे कारण लज्जित होना पड़ रहा है।"

अजय ने उसे सान्त्वना दी, "विजय, अभी भी समय है, तुम अपने तौर-तरीके बदल दो। तुमने अपनी ग़लती महसूस की है, इसलिए अब तुम अपने को जल्दी बदल सकते हो। मैं तुम्हारे माता-पिता से मिलूँगा और उनके क्रोध को शान्त करने का प्रयास करूँगा।

विजय को समझ में आ गया कि असंतोष

और लालच ने उसे कहाँ पहुँचा दिया है। उसने संकल्प किया कि अब से जो कुछ उसके पास है उसी से संतुष्ट रहेगा। वह अब बदल चुका था। उसने यह भी महसूस किया कि उसका सच्चा दोस्त कौन है।

बाल-बाल बचे!

अरुन्धती सरकार
कोलकाता

"पोंगो ! नहीं ! तुमने मेरे प्रयोग का क्या कर दिया? नटखट, शैतान कुत्ते ! अभी तुरन्त जाओ यहाँ से !" रिया चिल्लाई। पोंगो भाग गया। रिया भोजन कक्ष तक गई। "ओह ! मेरा बहुमूल्य प्रयोग !" वह चीख पड़ी। "यह सब पोंगो ने किया ! अब मैं क्या करूँ? पोंगो, तुम्हें नहीं मालूम तुमने मेरा कितना बड़ा नुकसान कर दिया !"

रिया एक उत्तेजनापूर्ण प्रयोग कर रही थी। वह मच्छरों, मक्खियों तथा अन्य कीटों को भगाने का एक रासायनिक मिश्रण तैयार कर रही थी। उसने अपने घर के अध्ययन कक्ष को प्रयोगशाला में बदल दिया था और उसमें किसी को जाने नहीं देती थी। लेकिन उसका बड़ा भाई ऋजु और उसका पालतू कुत्ता पोंगो दोनों उसके प्रयोग को नष्ट करने की कोशिश करते।

रिया को विज्ञान बहुत प्रिय था और वास्तव में वह एक होनहार वैज्ञानिक थी। वह विशेष तौर पर विद्युत, संवाहकों और असंवाहकों में रुचि लेती थी।

जब रिया का जन्मदिन वर्षा ऋतु के आसपास आया तो उसने एक बड़ी पार्टी के लिए अपनी सहेलियों को बुलाया। जब रिया और इसकी सहेलियाँ उत्तेजना में इधर-उधर भाग रही थीं और चीख-चिल्ला रही थीं, तब उसकी माँ टी.वी. पर सिरियल देख रही थी। फिर वे बैठ गयीं और कार्टून पर चर्चा करने लगीं। कुछ देर बाद जन्मदिन का केक काटा गया। हरेक ने केक का एक-एक टुकड़ा खाया और कूल ड्रिंक लिया। इसके बाद वे खेलने लगे। पोंगो भी उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगा तथा जब भी किसी को पकड़ लेता तो उसके हाथों को चाटने लगता।

जब जन्मदिन की पार्टी पूरे शबाब पर थी तभी सबने अपने चेहरों पर शीतल हवा का एक झोंका महसूस किया।

"ओह ! लगता है, बारिश होगी !" रीमा चीखी।

के. श्रीराम
राजामुन्द्री

"तुम बिलकुल ठीक कहती हो !" रिया चिल्लाई। फिर जोर से बारिश होने लगी। "मैं कैसे घर जाऊँगी?" अमृता घबराई।

"सड़कों पर बाढ़ आ जायेगी, यदि देर तक बारिश हुई !" रीमा उदास

होकर बोली।

"मम्मी ! मम्मी ! टी.वी. को तुरंत बंद करो। बारिश के समय टी.वी. चलाना खतरनाक है।" रिया चिल्लाई।

उसकी माँ ने उसकी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। हरेक ने बादलों का गर्जन सुना। रिया फिर चीख पड़ी, "मम्मी, केबल को टी.वी. से अलग कर दो। नहीं तो दुर्घटना हो जायेगी !"

कुछ ही क्षणों के बाद एक भीषण आवाज सुनाई पड़ी। फिर किसी का चीत्कार सुनाई पड़ा। सभी लॉज की ओर दौड़ पड़े जहाँ रिया की मम्मी टी.वी. देख रही थी। वे सब वहाँ का दृश्य देखकर घबरा गये। वज्रपात के कारण दुर्घटना हो गई थी। रिया की मम्मी टी.वी. के प्लग से चिपक गई थी। वज्रपात के समय उसने तार को टी.वी. से अलग करने की कोशिश की। तभी उसे बिजली लग गई।

"डैड, मम्मी को न छुएँ।" जैसे ही रिया ने अपने डैडी को माँ की ओर दौड़कर जाते हुए देखा वह चिल्ला पड़ी। रिया एक लकड़ी लेकर दौड़ती हुई आई और उसने उससे मम्मी के हाथ पर जोर से मारा। शीघ्र ही उसका हाथ प्लग से हट गया। और वह जमीन पर लुढ़क गई। ऋतु तुरंत पम्प हाउस की तरफ भागा और इलेक्ट्रिशियन नाबा को बुलाकर ले आया।

माँ को बेड रूम में ले जाया गया। पानी पीने के बाद वह शीघ्र ही ठीक-ठीक महसूस करने लगी।

नाबा ने प्लग अलग करते हुए रिया की तारीफ की, "शाबाश रिया ! तुम्हारी सर्तकता से एक बड़ी दुर्घटना टल गई। तुम्हारी माँ की मौत हो सकती थी।"

"मुझे मालूम था कि वज्रपात से टी.वी. को क्षति पहुँच सकती है और टी.वी. देखनेवालों को जान का खतरा हो सकता है।" रिया ने गर्व के साथ कहा।

"बिलकुल ठीक !" नाबा ने कहा। सबने विज्ञान के ज्ञान के लिए रिया की तारीफ की और जोर से तालियाँ बजाईं।

जैसे को तैसा

वी. अपर्णा
सिकन्दराबाद

एक गाँव में अमीरचन्द नाम का एक धनी जमींदार था। वह गरीब अनपढ़ किसानों को ठगा करता था। उनकी जमीनें हड़प लेता था। दूसरों की जायदाद हडपने का जब भी उसे मौका मिलता, वह कभी हाथ से जाने नहीं देता था।

एक दिन चम्पक नाम का एक चतुर व्यक्ति उस गाँव में बसने के लिए आया। खेती के लिए वह कुछ जमीन खरीदना चाहता था। वह अमीरचन्द से मिला, ''क्या कुछ खेती की जमीन आप बेचेंगे?''

'वह देखने में मूर्ख है। लेकिन इसके पास काफी पैसा है, ऐसा लगता है। इसलिए गाँव के उत्तर में जो ऊसर जमीन पड़ी है, वही इसे क्यों न बेच दें !' अमीरचंद ने सोचा।

चंपक जमीन खरीदकर बहुत खुश था। वह उस पर कठिन परिश्रम करने लगा। कुछ दिनों के पश्चात उसने अनुभव किया कि अमीरचंद ने उसे धोखा दिया। उसे अमीरचंद पर बहुत क्रोध आया।

चंपक अमीरचंद के पास जाकर बोला, ''तुमने मुझे धोखा दिया है। तुम्हारी जमीन जो मैंने खरीदी है ऊसर है। मुझे वह जमीन नहीं चाहिए। मेरे पैसे वापस कर दो।''

लेकिन अमीरचंद ने उसकी बात को इनकार करते हुए कहा, ''तुम्हें खरीदने से पहले जमीन की अच्छी तरह जाँच-पडताल कर लेनी चाहिए थी।'' चंपक कुछ बोल नहीं सका। वह निराश होकर चला गया।

उसने अमीरचंद को पाठ सिखाने का निश्चय किया। वह जानता था कि अमीरचंद हरेक महीने के पहले मंगलवार को अपनी जमीन की देख-भाल करने जाता है। इसलिए अगले महीने के पहले मंगलवार को चंपक अपने खेत पर गया और कठिन परिश्रम करने का बहाना किया। अमीरचंद ने उसे खेत पर झुका हुआ देखा और आश्चर्य किया कि वह ऊसर जमीन पर इतना कठिन परिश्रम क्यों कर रहा है।

बैशाखी पाल
उत्तर २४ परगना

अगले महीने के पहले सोमवार को चंपक ने शहर जाकर काफी मात्रा में गन्ना खरीदा। फिर उसने अपने ऊसर खेत पर गड्ढे खोदकर उन्हें रोप दिया। दूसरे दिन प्रातः गन्ने के कुछ और बंडल ले जाकर खेत पर रख दिया। मानो उसने अपने खेत से गन्ने की फसल काटी हो। दिन में जब अमीरचंद अपने खेत पर गया तो उसे चंपक के खेत पर मोटे गन्ने काटते हुए देखकर आश्चर्य हुआ।

चंपक अमीरचंद के पास जाकर बोला, ''महोदय, मैंने आपसे जो जमीन खरीदी थी, उस पर गन्ने की बड़ी अच्छी फसल हुई। मेरी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में आप कृपया गन्ने का यह बंडल स्वीकार करें।'' और उसने गन्ने का एक बंडल उसके सामने रख दिया।

अमीरचंद ने एक गन्ने को तोड़कर चखा। वह बहुत मीठा था। उसका लालच बढ़ गया। वह अपनी जमीन अब वापस लेना चाहता था। उसने चंपक से पूछा कि क्या तुम अपनी जमीन वापस मुझे बेचना चाहोगे। चंपक ने इनकार कर दिया। अमीरचंद ने तब बहुत आकर्षक प्रस्ताव रखा, ''यदि तुम जमीन अभी बेचो तो मैं, जो मूल्य लिया है उसका दुगुना दूँगा।'' चंपक ने फिर भी इनकार कर दिया, ''मैं इतनी उपजाऊ जमीन क्यों बेचूँ? मैंने तो अभी इससे कमाना शुरू किया है। मैं इसे तुम्हें नहीं बेचना चाहता।''

तब अमीरचंद ने और लालच देते हुए कहा, ''मैं दुगुनी कीमत के साथ-साथ गाँव की कुछ सचमुच उपजाऊ जमीन भी दूँगा। बिलकुल मुफ्त।''

चंपक ने 'अनिच्छापूर्वक' इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। वह घर लौटते समय बहुत प्रसन्न था। उसने लालची जमींदार को अच्छा सबक सिखा दिया। जैसे को तैसा।

जब अमीरचंद को पता चला कि उसके साथ धोखा किया गया है तो वह लाल-पीला होने लगा। लेकिन उसने अनुभव किया कि उसे उसी की दवा दी गई है। उसने गाँववालों को धोखा देना बंद कर दिया।

सॉफ्टी के साहसिक कार्य

पी. कात्तिकिया
विजयवाडा

एक समय एक शिशु-खरगोश जिसका नाम सॉफ्टी था, एक बिल में अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन सॉफ्टी भोजन की तलाश में जंगल में अकेला जाना चाहता था। लेकिन उसकी माँ ने कहा, ''अकेले मत जाओ। तुम बहुत छोटे हो और बड़े जानवर तुम्हें खाने की कोशिश कर सकते हैं।'' लेकिन सॉफ्टी ने माँ की बातों पर ध्यान नहीं दिया।

अगले दिन सुबह वह अकेला जंगल में चला गया। शीघ्र ही उसे एक आवाज सुनाई पड़ी। उसने मुड़कर देखा कि एक भालू उसी की ओर आ रहा है। वह डर गया। अचानक एक पेड़ की एक सूखी टहनी उसके पैरों के पास गिर पड़ी। इसे देखते ही उसके मन में एक विचार आया। सॉफ्टी ने भालू पर टहनी फेंक दी। इससे भालू को चोट आ गई। जब तक भालू ने अपने को संभाला, सॉफ्टी भाग गया।

सॉफ्टी एक झाड़ी के पास पहुँचा और वहाँ कुछ देर तक बैठा। अब वह घर जाना चाहता था। इसलिए वह घर की ओर चल पड़ा। अचानक एक लोमड़ी ने उसे देख लिया और वह सॉफ्टी की ओर बढ़ा। लोमड़ी को देखकर सॉफ्टी भागने लगा।

उसने एक पेड़ पर मधुमक्खी का एक छत्ता लटकता देखा। उसके मन में एक विचार आया। उसने तुरंत एक पत्थर उठाकर छत्ते पर मारा। और भाग गया। मधुमक्खियाँ शांति में विघ्न पड़ने के कारण गुस्से में बाहर आईं। उन्होंने लोमड़ी को देखा और सोचा कि उसी ने उनके छत्ते पर पत्थर फेंका है। इसलिए उन्होंने लोमड़ी पर आक्रमण कर दिया।

सॉफ्टी एक पेड़ के पास पहुँचा और उसके नीचे

बैशाखी पाल
उत्तर २४ परगना

गाढ़ी नींद में सो गया। जब वह सोकर उठा तो उसने अपने निकट कुछ गाजर पड़ा देखा। वह बहुत भूखा था, क्योंकि सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था। उसने गाजर चबाना शुरू किया। जब वह खा रहा था तो उसे लगा कि उसे कोई देख रहा है। उसने चारों ओर देखा। वहाँ एक शिशु-हाथी खड़ा था। वह फिर डर गया और भागना चाहता था। लेकिन शिशु-हाथी ने उसे रोका और कहा, ''मुझसे डरो मत। मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा।''

सॉफ्टी खुश होकर हाथी की पीठ पर बैठ गया। शीघ्र ही हाथी ने उसे घर पहुँचा दिया। सॉफ्टी की माँ उसे सही सलामत वापस आये देखकर बहुत प्रसन्न हुई। सॉफ्टी और उसकी माँ ने शिशु-हाथी को धन्यवाद दिया। सॉफ्टी ने अपनी माँ को बताया कि उसके साथ जंगल में क्या-क्या हुआ। उसकी माँ ने कहा, ''इस बार तुम बच गये, परंतु हर बार नहीं बच सकते। सॉफ्टी ने कहा, ''माँ, अब से मैं तुम्हारी बात मानूँगा और जब तक बड़ा न हो जाऊँ, जंगल में अकेला नहीं जाऊँगा। इसके बाद सॉफ्टी माँ की गोद में गहरी नींद में सो गया।

जब वे छोटे थे : च्यवन

च्यवन संभवतः पुराण साहित्य में सबसे नन्हा शूरवीर है। भृगु ऋषि की पत्नी पुलोमा थी। एक असुर ने उसका अपहरण करना चाहा। उसने सहायता के लिए पुकारा, लेकिन उसकी सहायता के लिए कोई आस-पास नहीं था। च्यवन माँ के गर्भ में था। असुर ने अहंकार से कहा, ''यहाँ कोई नहीं है। इसके अतिरिक्त, मुझे ललकारने की भला किसमें हिम्मत है?''

तभी अविलम्ब बिजली की तरह एक तेज रोशनी चमकी। इससे क्षण भर के लिए वह अंधा हो गया। जब वह देखने योग्य हुआ तब वह अपने सामने एक ज्योतिर्मय शिशु को देखकर चकित रह गया। वह शिशु च्यवन था, पुलोमा का पुत्र। वह असुर की चुनौती स्वीकार करने लिए माँ के गर्भ से बाहर आया था। च्यवन ने असुर को एक तमाचा मारा और असुर धम से पृथ्वी पर गिर पड़ा, निष्प्राण !

अंतरिक्ष में रोमांचपूर्ण एक महीना

पी. कार्तिक
रामास्वामी, चेन्नई

सुबह की धूप निकल आई थी। सबकुछ सामान्य था। लेकिन मेरे लिए यह एक विशेष दिन था क्योंकि अंतरिक्ष में यात्रा के लिए मुझे कार से नासा अंतरिक्ष स्टेशन ले जाया जा रहा था। शीघ्र ही मैं वहाँ पहुँच गया।

मैं अपने चाचा के साथ यात्रा कर रहा था। वे अंतरिक्ष यात्री थे। वे अंतरिक्ष यान नियंत्रण और अंतरिक्ष के विषय में हर चीज़ जानते थे। हम लोग 'अंतरिक्ष रानी' (स्पेस क्वीन) नामक अंतरिक्ष यान में सवार हो गये। मैंने उत्सुकता से चारों ओर देखा। अंदर का नियंत्रण देखकर मैं हैरान रह गया।

मेरे चाचा ने कुछ कर्मचारियों के साथ कुछ समय तक विचार विमर्श किया। इसके बाद वे चले गये। अब हम लोग उड़ान के लिए तैयार थे। काउण्ट डाउन शुरू हुआ। मैं उत्तेजित अनुभव करने लगा था। जैसे ही काउण्ट डाउन खत्म हुआ अंतरिक्ष यान आसमान की ओर उड़ चला।

शीघ्र ही हम लोगों ने पृथ्वी का वातावरण बहुत पीछे छोड़ दिया। मैं सूर्य और चंद्रमा को अंतरिक्ष यान की अति सुरक्षित शीशे की खिड़की से स्पष्ट देख सकता था। मैं अंतरिक्ष में टिमटिमाते सितारों को भी देख सकता था।

मैंने अपनी घड़ी पर नजर डाली। ग्रीनविच मीन टाइम के अनुसार साढ़े छः बज रहे थे। समय जैसे भाग गया। मेरे चाचा ने मुझे चारों ओर से अंतरिक्ष यान को दिखाया। और यहाँ तक कि नियंत्रण को कैसे चलायें और संकटकाल में यान को कैसे उड़ायें, यह भी सिखाया।

अब मुझे भूख लगने लगी। मुझे लगा जैसे युगों से मैंने खाना नहीं खाया है। मेरे चाचा ने भी ऐसा ही अनुभव किया। उन्होंने भोजन का एक पैकेट खोला। उसमें कई सैंडविचेज थीं। हम लोगों ने उन्हें तुरंत खा लिया।

शीघ्र ही मुझे नींद आने लगी। लेकिन जब मैं लेटा तो नींद नहीं पड़ी। शायद यह अंतरिक्ष यात्रा

की उत्तेजना के कारण हुआ हो। लेकिन मेरे चाचा सो गये। मैं बहुत देर तक यह सोचता रहा कि अगले दिन हम क्या करेंगे। और फिर मुझे याद नहीं रहा कि कब नींद आ गई।

दूसरे दिन सबेरे मैं पृथ्वी के समय के अनुसार साढ़े पाँच बजे उठा। मेरे चाचा पहले ही जाग चुके थे और वे पृथ्वी के स्टेशन से संपर्क स्थापित कर रहे थे।

हम लोगों ने नाश्ता करके कुछ देर तक बातचीत की। मेरे चाचा ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन (इण्टरनेशनल स्पेस हाउस) तक पहुँचने में ७ दिन लग जायेंगे, जहाँ हम लोगों को एक महीना ठहरना था। पाँच दिन गुजर गये। छठे दिन प्रातः काल सवेरे चाचा ने मुझे कहा कि अगले कुछ ही मिनटों में हम लोग अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन पहुँच जायेंगे। मैं बहुत उत्तेजित था।

हम लोग शीघ्र अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन पहुँच गये। अंतरिक्ष यान अवतरण-क्षेत्र में उतरा। हम लोग अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन के अंदर गये। मैं चकित रह गया। यह बिलकुल घर जैसा था। यह उन सभी चीजों से सुसज्जित था जो एक आरामदेह घर में पायी जाती हैं। टी.वी., कम्प्यूटर, फर्नीचर आदि।

मेरे चाचा जो पिछले छः दिनों से अकेले यान का परिचालन कर रहे थे, थके मांदे थे, इसलिए वे तुरंत सोने चले गये। मैं टी.वी. देखता रहा। अचानक मैंने बाहर से आती हुई गड़गड़ाहट की आवाज सुनी। पहले तो मैंने अपना स्पेस स्यूट पहना और अंतरिक्ष के लिए विशेष चश्मा लगाया जो अंतरिक्ष के पदार्थों को पहचानने में मदद करता है, और बाहर आया। बाहर आकर जो देखा तो लगा मुझे बाहर नहीं आना चाहिए था।

यह उल्का था। मैं इसे अंतरिक्ष में अंधकार के कारण पहचान सका। यह तेजी से हमारी ओर बढ़ता आ रहा था और हमें ऐसा लगा मानों क्षण भर में यह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन से टकरा जायेगा। मैं डर गया। मैंने तुरंत चाचा को जगाया और सब कुछ बता दिया।

पहले तो वे भी घबरा गये। फिर वे झट उठकर एक उपकरण के पास गये जो दूरदर्शक की तरह दिखाई देता था। मेरे संकेत की दिशा में जब उन्होंने देखा तो वे मुस्कुरा पड़े। मैं कुछ समझ न सका। वे क्यों मुस्कुरा रहे थे? क्या उल्का अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष भवन की ओर नहीं आ रहा था?

मुस्कुराने का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि उल्का वास्तव में हम लोगों

से दूर जा रहा है। उन्होंने दूरदर्शक जैसी चीज़ के पास मुझे बुलाया। उसे निकट से देखने पर उनकी बात मुझे सही लगी। मैंने राहत की साँस ली।

तीन सप्ताह गुजर गये। कुछ भी असाधारण घटित नहीं हुआ। अंतरिक्ष भवन छोड़ने का समय आ गया। मैं उदास था। वापस आते समय वहाँ की हर चीज़ से विदा ली।

अंतरिक्ष भवन दृष्टि से ओझल होता गया। शीघ्र ही हम दोनों सो गये। अंतरिक्ष में छः दिन गुजर गये।

अंतिम दिन हम देर से उठे। जब हम नाश्ता कर रहे थे तभी कॉकपिट से धुआँ आने लगा। कुछ जलने की गंध आ रही थी। हम लोग तुरंत कॉकपिट में गये। वहाँ देखा कि मेन कंट्रोल स्विच जल रहा है। हम लोगों को पता नहीं चला कि यह कैसे हुआ। तब पृथ्वी के स्टेशन से संदेश आया कि एक छोटे उल्के से अंतरिक्ष यान को टक्कर लगी है। इसी से आग लगी होगी। पृथ्वी के स्टेशन ने यह भी चेतावनी दी कि आग सारे यान को जला दे सकती है।

हम डर गये। चाचा ने कहा कि सामान्य गति से पृथ्वी पर जाने में कम से कम ढाई घण्टे लगेंगे। क्या आग उसके पहले हम सब को जलाकर भस्म कर देगी?

हम लोगों ने अग्नि शामक से आग बुझाने की कोशिश की। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। हम लोगों ने अन्य तरीकों से भी आग बुझाने का प्रयास किया, फिर भी आग बढ़ती गई। यह यान को तेजी से निगलती जा रही थी। अचानक मुझे एक विचार सूझा। मैंने अपना विचार चाचा को बताया और उन्होंने इसे शानदार बताया। उन्होंने तुरंत यान की गति अधिकतम कर दी।

पृथ्वी पर पहुँचने में अब भी आधा घंटा बाकी था। और आग आधे यान को निगल चुकी थी। अब यान के अंदर गर्मी बहुत बढ़ गई थी। लेकिन अब हम लोग पृथ्वी के वातावरण में अपेक्षित समय से पहले ही पहुँच चुके थे। वातावरण में पहुँचते ही हम लोगों ने पैराशूट लगाया और यान से कूद पड़े।

यान प्रशांत महासागर में विस्फोट के साथ गिर पड़ा। लेकिन तब तक हम लोग काफी दूर मंडराते हुए निकल गये थे। हम लोग सिडनी में उतरे। हमें प्राथमिक चिकित्सा दी गई और न्यूयार्क भेज दिया गया।

नासा पहुँचने पर कर्मचारियों ने हम लोगों से भेंट की और चाचा ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई। कर्मचारियों ने मेरे उस विचार के लिए मेरी तारीफ की जिससे हम लोगों की जान बची। साहस के लिए मुझे पुरस्कृत किया गया।

खबरों में बच्चे

उसकी कहानी पाठ्य-पुस्तक में

केरल के एक परिवार में जन्मा १३ वर्षीय मैथ्यू रोम के एक स्कूल में पढ़ रहा है, जहाँ उसके पिता एक भारतीय रेस्तरां चलाते हैं और उसकी माँ आयुर्वेद चिकित्सक हैं। जब वह सातवीं कक्षा में था तब उसकी अपनी नागरिक शास्त्र की पाठ्य पुस्तक में एक पाठ के रूप में ''मैथ्यू की कहानी'' पढ़ने का उसे एक अनोखा अनुभव हुआ। जब मैथ्यू चौथी कक्षा में था, तब बच्चों की एक पत्रिका में उसने स्वयं यह लेख लिखा था जिसे शिक्षा विभाग ने पाठ्य पुस्तक में शामिल कर लिया। उसने इस लेख को इतालवी भाषा में लिखा था। मैथ्यू अंग्रेजी, फ्रांसिसी, लातिन और स्पैनिश में अच्छा ज्ञान रखता है और सम्प्रति ग्रीक सीख रहा है। यद्यपि वह अपनी मातृ भाषा मलयालम बोलता है, किन्तु इस भाषा में उसे पढ़ना-लिखना नहीं आता। कितने दुख की बात है!

स्कूल साथियों को छोड़कर उसके मित्र इटली के प्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी है, जैसे बाटी स्टुटा, जो उसके पिता डॉ. थॉमस के रेस्तरां में अक्सर आते हैं।

सूचना शिल्पविज्ञान की विलक्षण प्रतिभा

इंग्लैंड में मेडस्टोन निवासी छः वर्षीय गीता तनीनादन ने जी.सी.एस.इ. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है जो सेकेण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट के बराबर है। उसका स्पेशल पेपर सूचना शिल्प विज्ञान पर था। जी.सी.एस.इ. की परीक्षा में बैठने के पूर्व उसने निकटस्थ वाटफोर्ड के एक कॉलेज में ९ महीनों तक प्रत्येक शनिवार को लगातार ४ घण्टे के क्लास में अध्ययन किया था। उसके पिता तमिलनाडु के कंडासामी ने बताया कि उसकी बेटी ने दो साल की उम्र से ही कम्प्यूटर में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था और अक्सर कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए बाप-बेटी में 'झगड़ा' हो जाया करता था।

अपने भारत को जानो

दो महत्वपूर्ण जन्म दिन नवम्बर में आते हैं - एक तो भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का १४ नवम्बर को और दूसरा देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी का १९ नवम्बर को। इस महीने की प्रश्नोत्तरी उन्हें स्मरण करती है, उनके व्यक्तित्व को, उनके शासन-प्रबंध को और उनकी उपलब्धियों को।

१. उस पुस्तक का नाम क्या है जो पं. नेहरू ने बच्चों के लिए लिखी?

२. ''बहुत वर्षों पूर्व हम लोगों ने नियति के साथ एक भेंट निश्चित की थी और अब समय आ गया है जब हम अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे।'' यह पंडित जी के भाषण से लिया गया है। उन्होंने कब और कहाँ यह भाषण दिया? अवसर क्या था?

३. पं. नेहरू की दो बहनें थीं; उनमें से एक भारत में पहली महिला मंत्री बनीं। उनका नाम क्या था और किस राज्य में वह मंत्री बनीं ?

४. भारत जब स्वतंत्र हुआ तब पं.नेहरू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। सही या गलत?

५. इंदिरा गाँधी अपने बचपन में तरुणों के एक ऐसे दल की नेत्री थीं जो स्वतंत्रता संग्राम में अपने साथियों को सहायता पहुँचाता था। उस दल ने क्या नाम रखा था? उनका मुख्य कार्य क्या था?

६. इंदिरा गाँधी सन् १९७१ में लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर थीं। वह कौनसी चीज थी जिसने इन्हें इतना लोकप्रिय बना दिया?

(उत्तर अगले महीने)

अक्तूबर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. मैसूर, जहाँ दस दिवसीय पर्व का समापन एक विशाल शोभा यात्रा के साथ होता था। शोभा यात्रा का नेतृत्व सुसज्जित हाथी पर सवार पूरे राजचिह्न के साथ महाराजा करते थे।

२. उड़ीसा में पुरी की रथयात्रा, जब भगवान जगन्नाथ, बलभद्र तथा सुभद्रा की प्रतिमाएँ सुसज्जित रथों में शोभा यात्रा के साथ बाहर निकाली जाती हैं। अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए लोग रथ को खींचने में एक दूसरे के साथ होड़ करते हैं।

३. जनवरी में मकर संक्रांति के अवसर पर गुजरात में पतंग उड़ाते हैं और तमिलनाडु में पोंगल बनाते हैं।

४. ईद-उल-ज़ोहा।

५. खोरदाद साल।

६. मदुराई में चित्रैइ पर्व मीनाक्षी मंदिर की अधिष्ठात्री देवी के प्रभु सुंदरेश्वरर के साथ विवाह के अवसर पर मनाया जाता है।

७. माइलापुर में कपालीश्वरर मंदिर। कपालीश्वरर भगवान शिव का दूसरा नाम है।

८. शिमगो।

विघ्नेश्वर

एक बार लक्ष्मी मान सरोवर में स्नान कर रही थीं, तब पार्वती विष्णु का वेष धरकर उनके समीप पहुँचीं। अत्यंत मनोहर लगनेवाले नारायण की ओर लक्ष्मी देवी ने अपनी दृष्टि दौड़ाई। नारायण के वेष में स्थित पार्वतीजी को लक्ष्मी का सौंदर्य अत्यंत मनोमुग्धकारी मालूम हुआ।

दोनों ने एक दूसरे की ओर प्रेमपूर्ण दृष्टि दौड़ाई। उन दृष्टियों के मिलन से सरोवर में एक स्वर्ण कमल उग आया। उसमें चकाचौंध करनेवाली एक बालिका प्रत्यक्ष हुई। लक्ष्मी ने नारायण के समीप जाकर उनके साथ गाढ़ालिंगन किया। इस पर पार्वतीजी खिल-खिला कर हँसती हुई बोलीं, ''मैं नारायण नहीं हूँ, बल्कि पार्वती हूँ।'' यों कहते पार्वतीजी अपने निज रूप में प्रत्यक्ष हुईं।

लक्ष्मी ने परिहासपूर्वक कहा, ''तुम भी अपने भाई के योग्य बहन हो, पार्वती!''

पार्वती ने कहा, ''एक बार विष्णु ने मोहिनी का रूप धरकर शिवजी को माया में डाल दिया था। उसका बदला मैंने यों ले लिया है। समझीं।''

इसके बाद स्वर्ण कमल के बीच एक सुंदर बालिका को देख लक्ष्मी और पार्वती आनंद विभोर हो गईं। अपार वात्सल्य से प्रेरित होकर दोनों ने उस शिशु को अपने हाथों में ले लिया। उस समय विघ्नेश्वर ने प्रवेश करके बताया, ''माताओ, आप दोनों के अंश से अवतरित यह शिशु पार्वतीजी की तरफ़ से जया तथा लक्ष्मी की तरफ़ से श्री मिलकर 'जयश्री' के नाम से प्रसिद्ध होगी। इसका पति भी शिव और केशव के अंशों के द्वारा

हरि तथा हर के अंशों से अवतरित स्वामी एक दिन विघ्नेश्वर और कुमारस्वामी से मिलने कैलास में गये। उस वक़्त विघ्नेश्वर तथा कुमारस्वामी प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करते, ''मान सरोवर में लक्ष्मी तथा पार्वती के तेज से स्वामी की होनेवाली पत्नी का उदय हो गया है!'' ये शब्द कहकर मौन रह गये।

स्वामी के मन में कौतूहल पैदा हुआ, फिर भी वे अपने मन पर नियंत्रण करके थोड़े दिन वहीं रहे, लेकिन जब वे वहाँ से लौटने लगे, तब विघ्नेश्वर ने कहा, ''स्वामी, आप हम दोनों भाइयों से उम्र में बड़े हैं, फिर भी आपका ब्रह्मचारी बने रहना हमको अच्छा नहीं लगता। शीघ्र ही आपको विवाह करना पड़ेगा!''
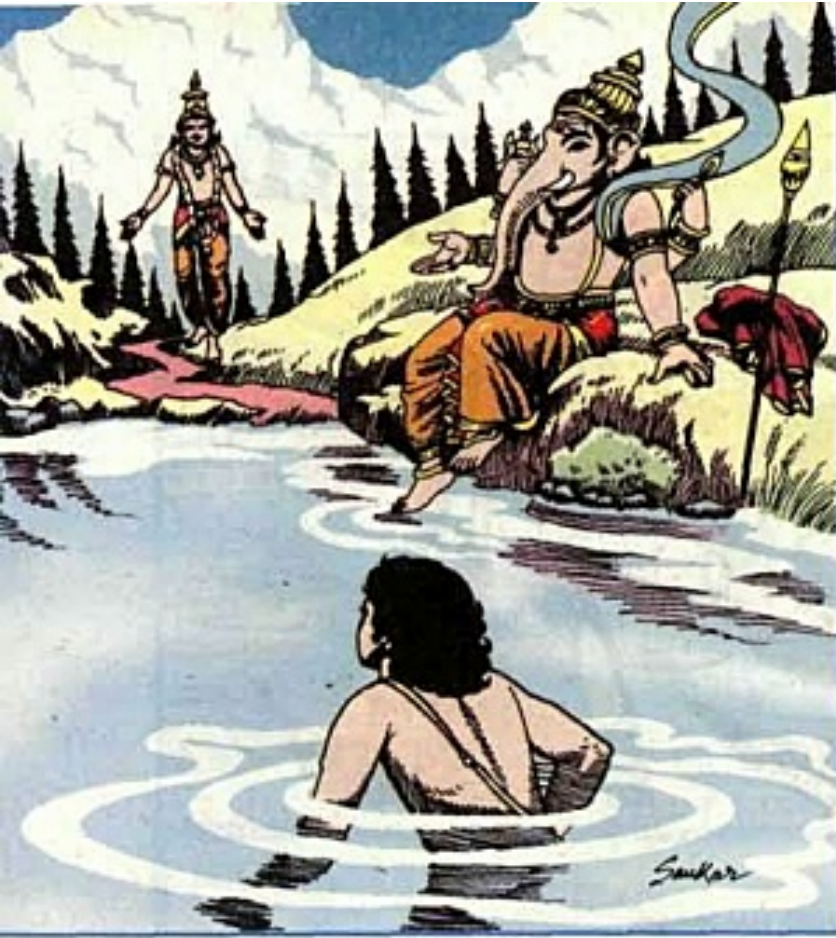
अवतरित हुआ है।'' यों समझाकर वायुदेव को आदेश दिया कि उस बालिका वाले स्वर्ण कमल को कावेरी नदी में बहाकर लौट आवे। वायुदेव ने जयश्री को कावेरी नदी में पहुँचा दिया।

इसके बाद दक्षिणी प्रदेश पर शासन करनेवाले चक्रवर्ती बालिका को अपने महल में ले जाकर नामकरण का उत्सव मनाने लगे, तब आकाशवाणी यों सुनाई दी, ''इस बालिका को 'जयश्री' के नाम से पुकारो।''

जयश्री एक राजकुमारी के रूप में पली व बढ़ी और तीनों लोकों में अत्यंत रूपवती और साहसी कहलाई।

जयश्री को राजमहल की अपेक्षा प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण जंगलों में विहार करना कहीं अच्छा लगता था।

इसके बाद कुमारस्वामी तथा विघ्नेश्वर ने आदरपूर्वक स्वामी को विदा किया। स्वामी अपने निवास को लौट आये।

एक दिन स्वामी शेर पर सवार हो विनोदपूर्वक जंगल में विहार कर रहे थे, तब कहीं से सर्र से बाण आ पहुँचे और स्वामी को रोकते चारों तरफ़ जमीन में धंस गये। स्वामी ने बाणों के आने की दिशा में क्रोध से देखा, पर दूसरे ही क्षण उनका क्रोध एकदम गायब हो गया। धनुष-बाण हाथ में लिये ठाट से मुस्कुरानेवाली जयश्री उन्हें दिखाई दी। उनकी दृष्टि स्वामी के हृदय में बस गई। पर स्वामी अंतर्धान हो गये।

विघ्नेश्वर ने स्वामी के बारे में जयश्री को स्वप्न में दर्शन देकर पहले ही बता दिया था। वह स्वामी

की खोज में बन में बिहार कर रही थी। इसके बाद नारद मुनि के आदेशानुसार चक्रबर्ती ने जयश्री के स्वयंवर का प्रबंध किया। राजाओं के रूप में इन्द्र आदि देवता बेष बदलकर उस स्वयंवर में पहुँचे। पर स्वामी एक साधारण शबर युवक के रूप में तीर-कमान धारणकर काले रंग के एक कुत्ते को साथ ले वहाँ पर आये।

राजाओं ने शबर युवक तथा उनके पालतू कुत्ते का मजाक़ उड़ाया। राजाओं के बीच उन्हें उचित आसन देकर बैठने नहीं दिया। स्वामी सिंहद्वार को रोकते हुए कुत्ते पर आसीन हो गये। दूसरे ही पल में कुत्ता शेर के रूप में बदल गया। इस पर जयश्री ने स्वामी को पहचान लिया और उनके कंठ में बरमाला डाल दी। स्वामी ने जयश्री को शेर पर बिठाया, इस पर देवता नाराज़ हो उस शबर युवक पर टूट पड़े। स्वामी ने उन सबका सामना किया।

स्वामी के बाणों के प्रहार से घबराकर सभी देवता तितर-बितर हो गये, तब अपने निज रूपों में स्वामी पर दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करने लगे। इन्द्र का बज्रायुध भी बेकार साबित हुआ। तब स्वामी अपने निज रूप में हरि हर स्वामी के रूप में प्रत्यक्ष हुए। देवताओं ने हाथ जोड़कर कहा, ''स्वामी, शरण दीजिए!''

इसके बाद स्वामी तथा जयश्री का विवाह देवताओं के बीच वैभव पूर्वक संपन्न हुआ। तब स्वामी जयश्री को साथ ले अपने निवास को चले गये।

त्रेतायुग में आर्यावर्त में कोसल, केकय तथा बसुमित्र नामक तीन राजा आपस में मैत्रीपूर्वक रहा करते थे। कोसल के कौसल्या, केकय के कैकेयी तथा बसुमित्र के सुमित्रा नामक कन्याएँ थीं। तीनों राजाओं के मन में एक साथ यही विचार पैदा हुआ कि अयोध्या के राजा दशरथ के साथ उन तीनों कन्याओं का बिवाह किया जाय। दशरथ ने उनके बिचार को मान लिया। तीनों राजाओं ने जैमिनी के द्वारा बिवाह का मुहूर्त रखवाया। जैमिनी मुनि ने कहा, ''मैंने बिवाह का जो मुहूर्त निश्चय किया है, बह ऐसा है कि विघ्नेश्वर को साक्षी बनाकर इन कन्याओं का विवाह दशरथ के साथ संपन्न होगा! मगर विवाह के पूर्व इन कन्याओं के लिए राक्षस का खतरा बना हुआ है। इसलिए तीनों को सावधानी से

रखना होगा।'' इस पर राजाओं ने तीनों कन्याओं को एक भारी पेटी में सुरक्षित रखा।

उधर नारद मुनि ने रावणासुर को बताया, ''हे लंकेश्वर ! दशरथजी का विवाह होने जा रहा है। याद रखो, दशरथ का पुत्र तुम्हारा संहार करेगा।''

इस पर रावण ने राजकुमारियों को उठा लाने के लिए महोदर नामक एक बड़े राक्षस को भेजा। महोदर ने पता लगाया कि उन कन्याओं को एक पेटी में सुरक्षित रखा गया है। उसने उस पेटी को ही निगल डाला। वह जब आकाश मार्ग से समुद्र पर लंका को जाने लगा, तब उसने पेट में दर्द होने के कारण उस पेटी को उगल डाला। तब पेटी समुद्र में गिर गई और लहरों पर तिरते चली गई।

उस समय दशरथ एक बड़ी नौका में वापस लौट रहे थे। मगर उनकी यात्रा में देरी हो गई। वे इस बात की चिंता करने लगे कि निश्चित समय पर वे अपने नगर को लौट नहीं पा रहे हैं, यही बात विचारते उन्होंने समुद्र की ओर दृष्टि दौड़ाई। तब उन्हें नौका की ओर बहकर चली आनेवाली एक भारी पेटी दिखाई दी। देखते-देखते नौका से पेटी टकरा गई और उसका ढक्कन निकल गया। उसके अन्दर तीन राजकुमारियाँ दिखाई दीं। रस्सों की सीढ़ियों के द्वारा जब उन्हें नौका पर पहुँचा दिया गया, तब दशरथ ने समझ लिया कि वे जिन तीन राजकुमारियों के साथ विवाह करना चाहते थे, वे ये ही हैं। ठीक उसी वक़्त जैमिनी मुनि ने मुहूर्त निर्णय किया था। उस समय विघ्नेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर तीनों राजकुमारियों के साथ दशरथ का विवाह संपन्न किया। इसके बाद वे अदृश्य हो गये। तीनों रानियों के साथ दशरथ अपने देश को लौट आये।

इस घटना के कई दिन बाद दशरथ के चार पुत्र पैदा हुए। बडे पुत्र श्रीरामचन्द्र जी कैकेई की वजह से सीताजी तथा लक्ष्मण के साथ बनवास में चले गये। रावण ने सीताजी को उठा ले जाकर लंका में रखा। रामचन्द्रजी ने हनुमान, सुग्रीव आदि बानरों की मदद से लंका को घेरकर रावण का संहार किया। सीताजी को लेकर पुष्पक बिमान में चल पडे। सेतु वाले समुद्र तट पर रुककर रामचन्द्रजी ने वहाँ पर शिवजी की पूजा करके अयोध्या को लौटना चाहा।

शिवलिंग को प्रतिष्ठित करने के लिए

रामचन्द्रजी ने हनुमान को कैलास भेजा। हनुमान मनोवेग के साथ कैलास पहुँचे। वहाँ के सबसे बड़े लिंग को देख उसे अपने हाथों से उठाना चाहा। पर लिंग जरा भी हिलात नहीं। वे सबसे छोटे लिंग को भी उठा नहीं पाये।

उधर समय बीतता जा रहा था।

जब हनुमान अपनी असमर्थता पर दुखी हो रहे थे, तब वहाँ पर एक छोटा बालक आ पहुँचा। उसने पूछा, ''महाशय, तुम कौन हो? देखने में हनुमान जैसे लगते हो, मगर तुम हनुमान नहीं हो !''

''मैं हनुमान ही हूँ। रामचन्द्रजी ने मुझे एक शिवलिंग लाने के लिए भेजा है। तुम कौन हो?'' हनुमान ने पूछा।

''मुझे यहाँ पर इसलिए पहरे पर बिठाया गया है कि यहाँ के लिंगों को कोई उठाकर ले नहीं जाये। पर मैंने सुना है कि हनुमान शिवजी का ही अवतार है और वह पंचमुखी आंजनेय है। लेकिन तुम्हारे पाँच मुख कहाँ हैं?''

इस पर हनुमान ने गरुड, वराह, सिंह, तथा अश्व मुखों को जोडकर पंचमुखी आंजनेय का रूप धर लिया और आसमान तक ऊपर बढते हँसकर उस बालक से बोले, ''विघ्नेश्वर, अब मेरी बारी समाप्त हो गई। पंचमुखी विघ्नेश्वर का रूप दिखाना अब आपकी बारी है।''

ये शब्द सुनकर विघ्नेश्वर अपने विश्व रूप के साथ प्रत्यक्ष हुए।

इसके बाद हनुमान ने पंचमुखी विघ्नेश्वर को प्रणाम करके कहा, ''महानुभाव, जब आप बालक के रूप में मेरी तरफ बढे, तभी मैंने समझ लिया
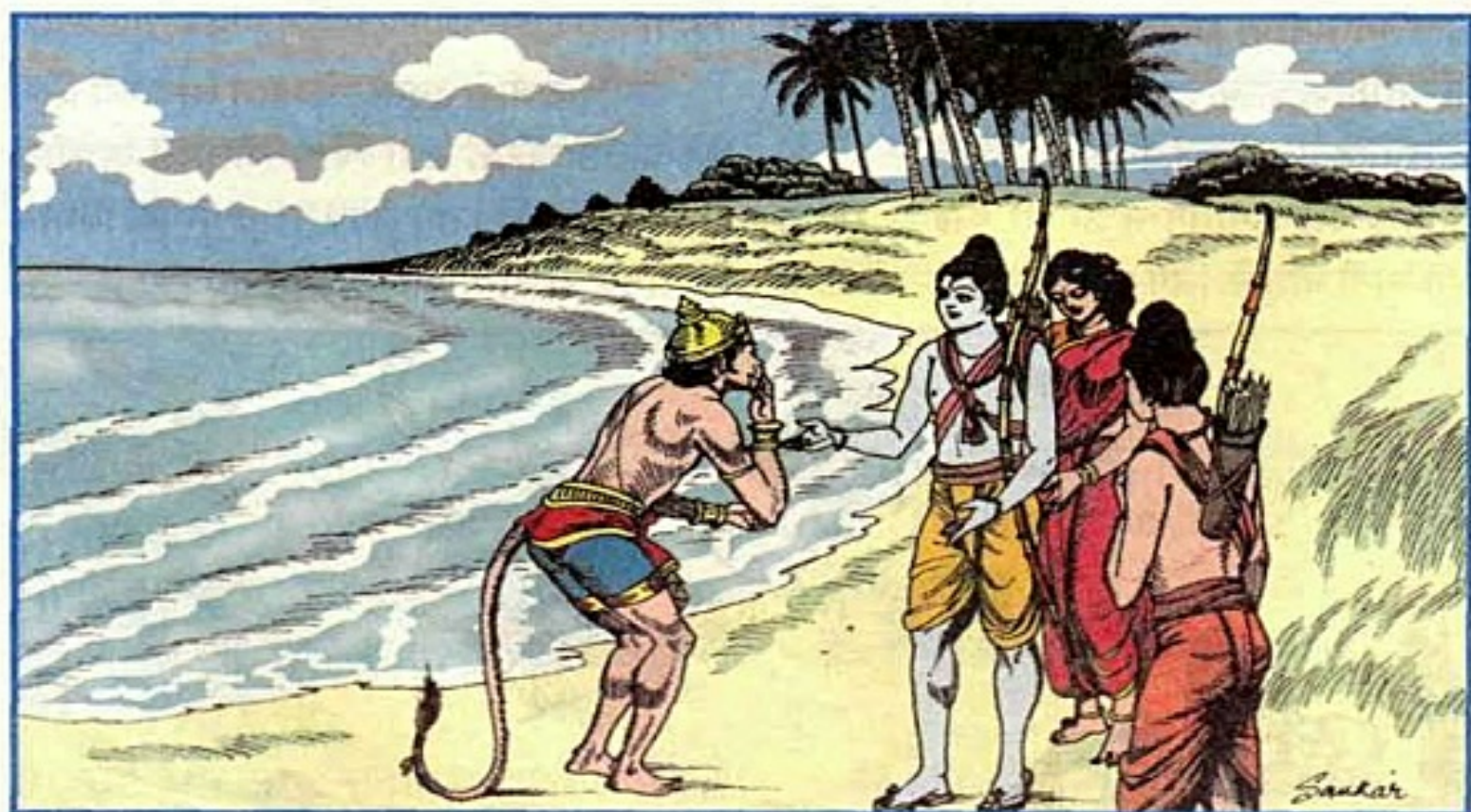
कि आप विघ्नेश्वर हैं। शिव लिंगों को हिलने से आपने ही तो रोक रखा है ! आप ही कृपया मुझे एक लिंग प्रदान कीजिए।''

इस पर विघ्नेश्वर बोले, ''हनुमान, तुम्हारे पंचमुखी रूप के दर्शन करने के ख्याल से ही मैंने ऐसा नाटक रचा है। तुम शिवजी के अंश से पैदा हुए हो ! तुमको रोकनेवाला कौन हैं? फिर भी तुमने मुझसे माँगा। इसीलिए विशेष अंश वाले लिंग को तुम्हें देने के वास्ते मैंने चुनकर रखा है। इसे ले जाओ।'' इन शब्दों के साथ हनुमान की अंजुली में सबसे बड़े ज्योतिर्लिंग को थमा दिया।

हनुमान लिंग को सावधानी से पकड़कर उड़कर चले गये। तब तक समय बीत चुका था। उधर समय से पहले ही सीतादेवी ने बालू से शिवलिंग बनाया था। रामचन्द्रजी जल से लिंग का अभिषेक करके लिंग की पूजा करने ही जा रहे थे, तभी हनुमान वहाँ पर उतर पड़े।

उसे देख हनुमान ने अपनी पूँछ से सैकत लिंग यानी बालू के लिंग को लपेटकर उसे मिटाना चाहा, पर बालू का लिंग नहीं मिटा। इस पर हनुमान ने कसकर अपनी पूँछ से लिंग को लपेट लिया, जिससे उसकी पूँछ में पीड़ा होने लगी, पर लिंग हिला तक नहीं।

रामचन्द्रजी ने हनुमान को शांत करके कहा, ''हनुमान, ज्ञानी भी जब-तब भूलकर बैठते हैं। तुम तो सर्वज्ञ हो ! भले ही यह सैकत लिंग क्यों न हो, शिवजी का रूप ही तो है ! शिवजी के साथ खिलवाड़ करना किसके लिए संभव है ! अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, तुम जो लिंग लाये हो, उसे सैकत लिंग के रूप में प्रतिष्ठित कर उसकी पूजा करके तब चलेंगे।''

इस पर हनुमान अपने साथ जो लिंग लाये थे, उसे रामचन्द्रजी के हाथ देकर कान पकड़ लिये और सैकत लिंग को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया।

रामचन्द्रजी ने हनुमान के द्वारा लाये गये लिंग की प्रतिष्ठा करके यथा विधि सीताजी के साथ उसकी पूजा की। तब सबके साथ पुष्पक विमान पर सवार हो अयोध्या को लौट गये।
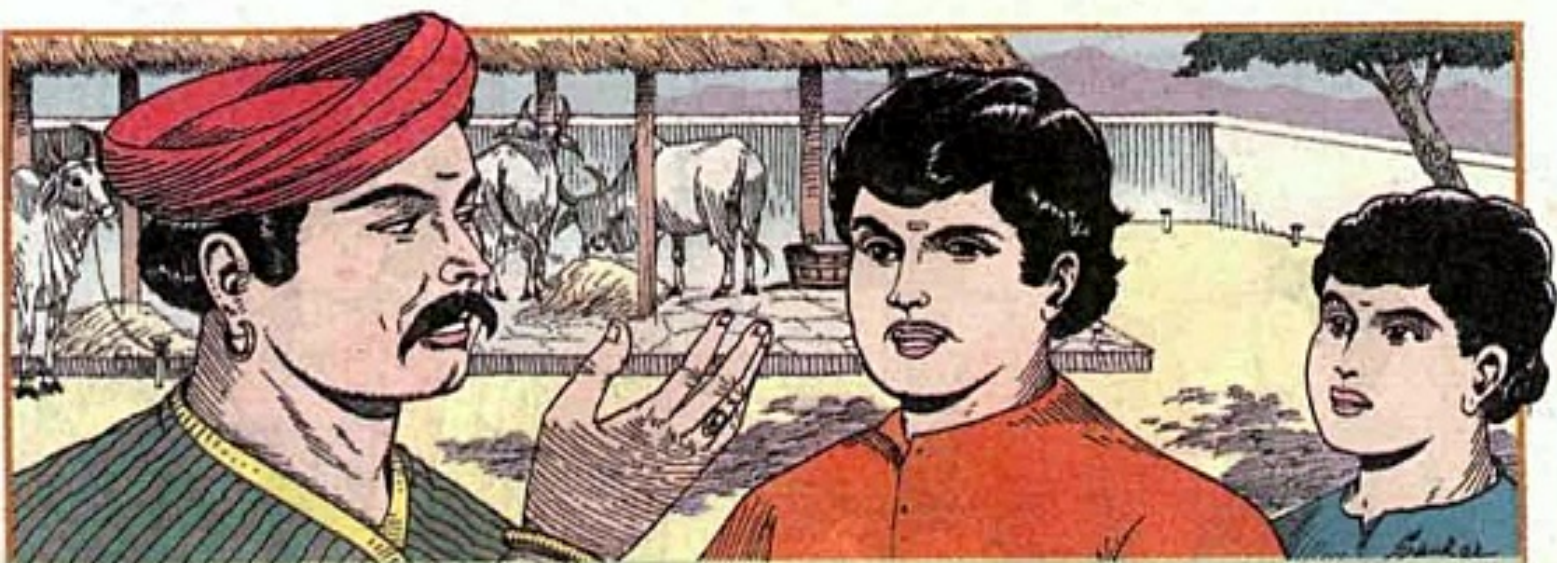
आँखें खुल गयीं

राम और सोम कटनी के निवासी थे। ये दोनों भाई थे। संपत्ति को लेकर उन दोनों में झगड़ा हो गया। गाँव के कुछ बड़े लोग राम के पक्ष में बोलते थे तो कुछ सोम के पक्ष में! दोनों इन बडे लोगों के बोलने के रंग-ढंग से ऊब गये। समस्या का निपटारा करने के बदले वे उस समस्या को और जटिल बना रहे थे।

वे सोच में पड़ गये कि अब क्या किया जाए। तब कमल नामक पशुओं का एक दलाल उनके गाँव आया। उसने उन दोनों से कहा, ''पशुओं के व्यापार को लेकर मैं अनेक जगहों में आता-जाता रहता हूँ। यहाँ से एक कोस की दूरी पर नागार नामक एक गाँव है। वहाँ धर्मवीर नामक एक व्यक्ति रहते हैं। वे दूध का दूध और पानी का पानी करने में सिद्धहस्त हैं।''

राम और सोम नागार चले गये। गाँव में प्रवेश करने के बाद उन्हें एक किसान दिखायी पड़ा। उन्होंने उससे पूछा, ''हम धर्मवीर से मिलने आये हैं। क्या आप बता सकते हैं, उनका घर कहाँ हैं?''

इस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए किसान ने कहा, ''उस बहरे से मिलने आये हो? ठीक है, सीधे जाओ,'' कहकर वह वहाँ से चलता बना। किसान के जवाब से दोनों भाई हक्का-बक्का रह गये। थोड़ी दूर और जाने के बाद नुक्कड़ पर खड़ी एक औरत को देखा। उन्होंने उससे धर्मवीर के घर का पता पूछा।

''उस अंधे धर्मवीर का पता पूछ रहे हो? देखो, सामने के नारियल के पेड़ के बगल से होते हुए सीधे जाना,'' कहकर वह चली गयी। वहाँ पहुँचने के बाद एक और औरत से उन्होंने पूछा।

वह उन दोनों को अजीब ढंग से देखने

- ईश्वर -

लगी और कहा, ''उस गूँगे धर्मवीर से तुम्हें क्या लेना-देना है? ठीक है, देखो, सामने के देवी मंदिर के बग़ल में ही उनका घर है,'' वह भी यों कहकर चली गयी।

इन तीनों की बातें सुनकर दोनों भाई चकरा गये। वे धर्मवीर के घर के सामने गये और पुकारा, ''धर्मवीर जी।''

''कौन?'' कहते हुए एक बृद्ध बाहर आया।

''धर्मवीर जी से मिलने आये हैं,'' दोनों ने कहा।

''मैं ही धर्मवीर हूँ। बताइये, बात क्या है?'' धर्मवीर ने कहा। दोनों भाई आश्चर्य भरे नेत्रों से उसे देखने लगे।

राम ने अपने को संभालते हुए कहा, ''एक किसान कह रहा था कि आप बहरे हैं।''

''हाँ, हाँ, कहा होगा। गाँव के किसान मुझपर ज़ोर डालते आ रहे हैं कि मैं तालाब को फिर से खुदवाऊँ। और वह काम मुझसे नहीं हो पा रहा है, इसलिए वे मुझसे नाराज़ हैं। इसी कारण उन्होंने ऐसा कहा होगा।'' धर्मवीर ने बताया।

''एक औरत तो कह रही थी कि आप अंधे हैं,'' सोम ने कहा।

''हाँ, हाँ, ज़रूर कहा होगा। मेरे घर की छत पर से खपरैल उड़ गये। वह चाहती है कि मैं फिर से घर की छत को खपरैलों से ढक दूँ। चूँकि मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ, इसीलिए उसने मुझे अंधा कहा होगा,'' धर्मवीर ने कहा।

''एक और औरत कह रही थी कि आप गूँगे हैं,'' राम ने कहा। ''गाँव के कुछ मर्द अपनी पत्नियों को सता रहे हैं। वे सब औरतें मेरे घर आती हैं और मुझसे अपने पतियों के

बारे में शिकायतें करती रहती हैं। वे सब चाहती हैं कि मैं उनके पतियों को सुधारूँ। क्योंकि मैं उनकी शिकायतों को दूर नहीं कर सका, बेचारी उस औरत ने इसीलिए मुझे गूँगा कहा होगा।'' धर्मवीर ने बताया।

दोनों भाइयों ने कहा, ''हमारे इस सवाल को सुनकर आप कृपया बुरा मत मानियेगा। कमल नामक पशुओं का एक दलाल हमारे गाँव आया था। वह कह रहा था कि जायदाद को लेकर हम भाइयों के बीच में जो झगड़ा हो रहा है, उसे आप निपटा सकते हैं।''

''मैं जो फ़ैसले सुनाता हूँ, वे न्यायोचित होते हैं। पर स्वार्थियों, अहंकारियों और अज्ञानियों को वे न्याय संगत नहीं लगते। मुझे मालूम है कि तालाब खुदवाने का यह सही समय नहीं है। अगर खुदवाऊँ भी तो उससे कोई फायदा पहुँचनेवाला नहीं है। इसीलिए मैं चुप रह गया। इस अंतरार्थ को किसान समझ नहीं पाये और मुझे बहरा कहने लगे। अभी गर्मियों के दिन हैं। इन दिनों खपरैलों से छत को नहीं भी ढका तो कोई नुक़सान पहुँचनेवाला नहीं है। इस बात को लेकर मेरी पत्नी मुझसे नाराज़ है, इसीलिए वह मुझे अंधा कहने से भी आनाकानी नहीं करती। पति-पत्नियों में झगड़े होते हैं, और यह बिलकुल सहज है। किस घर में ऐसे छोटे-मोटे झगड़े होते नहीं रहते! पर उन्हें चाहिए कि वे आपस में समझौता कर लें, एक दूसरे को शक की नज़र से न देखें, एक दूसरे का आदर करें। उन दोनों के बीच में किसी तीसरे आदमी की दखलंदाजी उचित नहीं होती। इससे झगड़ा और बढ़ने की भी संभावना है।'' धर्मवीर ने कहा।

दोनों भाइयों ने तुरंत सिर झुकाकर कहा, ''अब हमारी आँखें खुल गयीं। अब हमारी समझ में आ गया कि जायदाद की समस्या हमें खुद ही निपटानी चाहिए। अब हमें विश्वास भी हो गया कि हम यह काम कर सकते हैं।''

यों कहकर दोनों भाई अपने गाँव लौट गये।
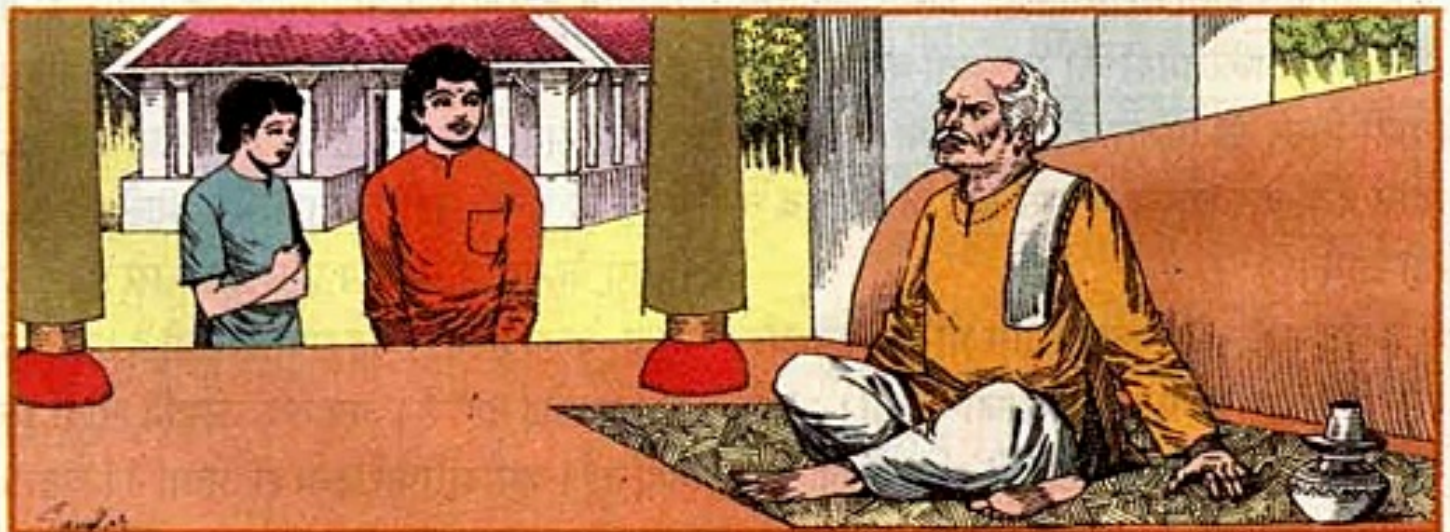
ज़मींदार तालाब

हयग्रीव नामक गाँव में एक ही ऐसा आदमी था, जिसके अपने खेत थे। वह उस गाँव का आधार-स्तंभ था। जिस किसी को भी सहायता की ज़रूरत पड़ती थी, वह उसकी मदद के लिए आगे आता था। उसके पास जितना था, उसी में से ग़रीबों की ज़रूरतों को भी पूरा करता था। दान देने में वह कभी भी नहीं हिचकिचाता। सब लोग यह कहकर उसकी प्रशंसा करते कि अगर यह ज़मींदार होता तो पता नहीं कितना और दान देता और ज़रूरतमंदों की सहायता करता। ऐसे दानी बिरले ही मिलते हैं। वे यह भी कहते कि दान देते-देते शायद बेचारा खुद ज़रूरतमंद न हो जाये।

धीरे-धीरे लोग उसका नाम भी भूल गये और वह ज़मींदार कहकर पुकारा जाने लगा। अपने परिवार में वह अकेला आदमी था। उसके ऐसे रिश्तेदार भी नहीं थे, जिनकी देखभाल का भार उसपर हो। हयग्रीव, चित्रदुर्ग संस्थान का एक गाँव था। अपनी ही ज़मींदारी के गाँव में एक अन्य व्यक्ति का ज़मींदार कहलाया जाना असली ज़मींदार को अखरा। उसने अपने दिवान को ज़रूरी तहकिक़ात करने का हुक्म दिया।

तब दिवान ने ज़मींदार से कहा, "किसी व्यक्ति को भगवान कहकर पुकारने मात्र से वह भगवान नहीं बन जाता। चूँकि यह व्यक्ति दानी है, परोपकारी है, इसलिए लोग उसे प्यार से ज़मींदार कहकर संबोधित कर रहे हैं। इससे आपके यश पर कोई धब्बा नहीं लगता। मैंने पहले ही इस विषय के बारे में विवरण प्राप्त कर लिये हैं। उसे दादा-परदादाओं से यह संपत्ति मिली है। उसका अपना कोई नहीं है। अब तक उसकी शादी भी नहीं हुई। ज़मींदारीपन जन्म से आता है। चढ़ती

- कृष्णा देशपांडे -

उम्र के जोश में वह दान-धर्म कर रहा है। जब वह भी गृहस्थ हो जायेगा तब ये दान-धर्म आप ही आप रुक जाएँगे। इस विषय में आपको इतना गंभीर हो जाने की कोई ज़रूरत नहीं।''

दिवान की बातों पर ज़मींदार हँसकर चुप रह गया। तभी हयग्रीव गाँव के ग्रामाधिकारी की अचानक मृत्यु हो गयी। नये ग्रामाधिकारी को नियुक्त किया जाना था। इसलिए ज़मींदार ने दिवान से कहा, ''आज से अपने संस्थान में केवल मैं ही ज़मींदार कहलाया जाऊँगा। यही अच्छा मौक़ा है। मृत ग्रामाधिकारी का कोई वारिस नहीं। अब उस व्यक्ति को ग्रामाधिकारी के पद पर नियुक्त कीजिए, जो सबकी दृष्टि में अच्छा व्यक्ति है। इससे कोई भी आगे उसे ज़मींदार कहकर नहीं पुकारेगा। अलावा इसके, हमें जो-जो कर उस गाँव से मिलने हैं, वसूल करेगा और जिम्मेदारी के साथ हमें सौंपेगा।''

ज़मींदार की आज्ञा के अनुसार वह व्यक्ति ग्रामाधिकारी के पद पर नियुक्त हुआ। फिर भी लोग उसे ज़मींदार ही कहकर संबोधित करते रहे। दिवान को यह बात मालूम थी, फिर भी उसने यह बात ज़मींदार से नहीं बतायी। उसे गुप्त ही रखा।

एक साल गुज़र गया। हयग्रीव गाँव के ग्रामाधिकारी ज़मींदार को कर वसूल करने थे, लेकिन लोगों की लाचारी पर तरस खाकर उसने खुद रक़म भर दी और आठ सौ रुपये गाँव के नौकर के हाथों खज़ाने में जमा करने के लिए चित्रदुर्ग भेजा।

हयग्रीव से ही नहीं बल्कि नौकर अन्य गाँवों के ग्रामाधिकारियों से भी रक़म वसूल करने आया था। चूँकि खज़ाने का अधिकारी काम में व्यस्त था, इसलिए नौकर ने पूरी रक़म अपने ही पास सुरक्षित रखी और रक़म भरने के लिए मौके का इंतज़ार करने लगा।

दिवान उस समय वहाँ से गुज़र रहा था। उस नादान और घबराये हुए नौकर को देखकर उसने उससे बात की, तो मालूम हुआ कि वह हयग्रीव से आया हुआ है। फिर उसने पूछा, ''कितना कर वसूल करके लाये हो?''

''साहब, आठ सौ लाया हूँ'' नौकर ने कहा।

''अच्छा। लगता है, तुम्हारा ज़मींदार ग्रामाधिकारी चतुर और प्रज्ञावान है। पुराने ग्रामाधिकारी ने कभी भी इतनी बड़ी रक़म खज़ाने

में जमा नहीं की। जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता कि तुम्हारी लायी रक़म सही है या नहीं तब तक तुम्हें रसीद नहीं दी जायेगी। फिर भी एक समर्थ ग्रामाधिकारी के भेजे नौकर का आदर तो होना ही चाहिए।'' यों कहकर दिवान ने आठ सौ रुपयों की प्राप्ति की रसीद मंगाकर दिलवा दी।

पर यहाँ एक ग़लती हो गयी। दिवान ने समझ रखा था कि नौकर ने रक़म भर दी और रसीद के इंतज़ार में है। खज़ाने के अधिकारी ने भी सोच रखा था कि रक़म जमा हो चुकी है, इसलिए दिवान के कहने पर उसने रसीद दे दी। नौकर चूँकि घबराया हुआ था, संकोची भी था, इसलिए चुप रह गया। उसे इस बात का डर था कि कुछ कहने से दिवान शायद नाराज़ हो जाएँ, इसलिए बिना कुछ बोले वह गाँव वापस लौट आया और वह रक़म ग्रामाधिकारी को दे दी।

ज़मींदार ने उस रक़म व उस रसीद को सुरक्षित रखा। एक दिन जब वह खेत से लौट रहा था, तब कुछ औरतों को पानी से भरे मटका ढोकर ले जाते हुए देखा। अब ज़मींदार को लगा कि गाँव में तुरंत एक तालाब खुदवाना चाहिए, ताकि पानी की तंगी न हो और गाँव की औरतों को पानी लाने दूर न जाना पड़े।

तुरंत उसने पानी का पता लगानेवाले निपुणों को बुलवाया। उन्होंने गाँव भर में आवश्यक जाँच करवाई और अंत में फ़ैसला किया कि उसका अपना खेत ही तालाब के लिए उचित जगह है। ग्रामाधिकारी ज़मींदार ने अपने खेत में से एक एकड़ ज़मीन तालाब के लिए दे दी और खुदवाने के प्रयास में लग गया। इसके लिए

उसने उन आठ सौ रुपयों का इस्तेमाल किया, जिन्हें नौकर खज़ाने में भरे बिना वापस ले आया था। तालाब की खुदाई जैसे ही पूरी हो गयी, लोग उसे ज़मींदार तालाब कहने लगे। उस तालाब की तारीफ़ होने लगी। चित्रदुर्ग के ज़मींदार को मालूम हुआ कि लोग इसे ज़मींदार तालाब ही कहकर पुकारते हैं।

ज़मींदार ने दिवान को बुलाकर तत्संबंधी विवरण माँगे। इस सिलसिले में तहकिकात हुई तो मालूम हुआ कि हयग्रीव से आठ सौ रुपये खज़ाने में भरे नहीं गये। ज़मींदार नाराज़ हो उठा और खुद हयग्रीव जाकर ग्रामाधिकारी से मिला।

ग्रामाधिकारी ने जो हुआ, सब कुछ बताया और रसीद भी दिखायी। फिर कहा, ''आप किसी भी दृष्टिकोण से देखिये, यह ज़मींदार तालाब ही है। जगह मेरी ही है पर आप अपने अधिकार के बल पर इसे अपना बना सकते हैं। तालाब की खुदाई पर जो खर्च हुआ, वह रक़म आपके खज़ाने की ही है। चूँकि रक़म प्राप्ति की रसीद मेरे पास है, इसलिए मैंने वह रक़म इस तालाब की खुदाई के लिए खर्च करने का साहस किया। हम सब आपके सेवक हैं। ज़मींदार का सेवक होने के नाते मैंने इसे खुदवाया इसलिए यह ज़मींदार तालाब कहलाने में क्या ग़लती है? अतः प्रार्थना है, आप हम पर नाराज़ न हों!''

ग्रामीणों ने भी एक-एक करके असली ज़मींदार से कहा, ''मालिक, यह ज़मींदार तालाब हमारे लिए बहुत ही उपयोगी है। आप कर थोड़ा-बहुत बढ़ाना भी चाहें तो हम देने को तैयार हैं।''

ज़मींदार थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया और फिर कहा, ''तुम्हारी व्यवहार शैली स्पष्ट बताती है कि ज़मींदार वह है, जो लोगों में घुलमिल जाए और उनकी भलाई करे। जो उदार हृदय का हो और प्रजा के हित में अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति भी देने में संकोच न करे। ज़ो हर समय उनके कल्याण की बात सोचे और बदले में किसी लाभ की कामना न करे। उनके दुख सुख को अपना दुख सुख समझे। ये सभी विशेषताएँ तुम्हारे चरित्र में हैं, इसलिए मैं तुम्हें ही ज़मींदार के रूप में स्वीकार करता हूँ।''

धर्मदाता

एक जमाने में कोसल देश में सिद्धिस्वामी नामक एक दानी था। उसकी दानशीलता की बात सारे देश में फैल गयी। राजा के कानों में जब यह बात पड़ी तब उसने सोचा, ''ऐसे व्यक्ति की सहायता करना पुण्य कार्य है।'' यह सोचकर राजा रोज़ सिद्धिस्वामी के यहाँ खाने के पदार्थ भेजने लगा।

सिद्धिस्वामी की पत्नी हंसमती सब प्रकार से अपने पति के योग्य थी। उन्हें खाने को भले ही न बचता, फिर भी वह दूसरों को खिला देती। राजा के द्वारा नित्य प्रति भेजे जानेवाले खाने के पदार्थों के कारण वे बेरोकटोक अन्न का दान करते रहे।

एक बार कोसल देश का राजा तीर्थ-यात्रा करते हुए काशी पहुँचा। जब लोग गंगाजी में स्नान करके वापस लौट रहे थे, तब कुछ सिपाहियों ने कहा, ''काशी के नरेश आ रहे हैं, हट जाओ।'' उन्होंने कोसल राजा को भी धकेल दिया।

इसे देख कोसल राजा के सिपाहियों को क्रोध आ गया। वे चिल्ला उठे, ''कोसल राजा को तुम लोग क्या समझते हो? काशी राजा को इतना घमण्ड?''

ये बातें काशी राजा ने सुन लीं। उसने अपने घोड़े को रोक कर कोसल राजा को नमस्कार किया और निवेदन किया, ''ओह, आप सिद्धिस्वामी के देश के राजा हैं! यह बात न जानने के कारण मेरे सिपाहियों ने अपचार किया है, क्षमा कीजिए।''

ये बातें सुनते ही कोसल राजा का मन कचोट उठा। ''मेरे दिये जानेवाले भोजन पदार्थों का अन्नदान करनेवाले सिद्धिस्वामी को ऐसा यश प्राप्त है!'' यह सोचकर राजा ने शीघ्र कोसल लौटकर सिद्धिस्वामी की सहायता बंद कर दी। इतना ही नहीं, सिद्धिस्वामी का अपयश करने के ख्याल से कोसल राजा उसके घर रोज़ अधिक संख्या में अतिथियों को भेजने लगा।

सिद्धिस्वामी को अतिथियों का सत्कार करने

के लिए अपनी जमीन-जायदाद बेचनी पड़ी। इसके बाद वह चन्दा वसूल करने निकल पड़ा। उनके दान के प्रति आदर भाव रखनेवालों ने दिल खोलकर धन की सहायता दी। मगर वह भी समाप्त हो गया। एक दिन सिद्धिस्वामी को बड़ी मुश्किल से एक पंसेरी चावल मात्र मिला। इधर बीस मेहमान खाने के इंतज़ार में बैठे थे। सिद्धिस्वामी को इसे देख बड़ी चिंता हुई।

उस समय हंसमती ने अपना मंगलसूत्र पति के हाथ में देकर कहा, ''आप चिंता न कीजिए, अपना कार्य पूरा कीजिए।'' फिर क्या था, अतिथियों का सत्कार संपन्न हो गया।

उस दिन शाम तक सिद्धिस्वामी के यहाँ एक कौड़ी भी न बची थी। वह अपनी पत्नी को साथ ले काशी की यात्रा पर चल पड़ा।

उस दिन रात को वे लोग एक सराय में ठहर गये। उसी सराय में कोई तीन यात्री आये। उनमें से एक ने कहा, ''हम कोसल देश जाकर सिद्धिस्वामी का आतिथ्य पानेको ललचा रहे हैं। हम कल ही वहाँ के लिए रवाना हो जायेंगे।''

ये बातें सुनकर सिद्धिस्वामी और उनकी पत्नी आश्चर्य में आ गये।

उन तीनों यात्रियों के सो जाने पर हंसमती ने अपने पति से कहा, ''पतिदेव, हम अभी रवाना होकर अपने घर जायेंगे। इनके आने के पहले भोजन का प्रबंध करना है। हमारे घर में एक कोल्हू और दो मूसल और बचे हैं। उन्हें बेच डालेंगे।'' हंसमती ने समझाया।

दोनों तुरंत रवाना होकर सवेरा होने के पहले घर पहुँचे। बेचने के लिए कोल्हू को हिलाया तो उसके नीचे उनके पुरखों के द्वारा छिपाये गये धन की हंडियाँ निकल आयीं। उस दिन पति-पत्नी ने उन तीनों यात्रियों को ही नहीं, बल्कि सारे गाँव वालों को दावत दी।

यह बात कोसल राजा के कानों तक पहुँची। उन्हें यह न सूझा कि अगर वह भोजन न भेजें तो भी भगवान दे सकता है। अब इस आश्चर्यजनक घटना को देख राजा ने पश्चात्ताप किया और फिर से पहले की भाँति सिद्धिस्वामी के यहाँ भोजन पदार्थ भेजना शुरू कर दिया।

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
21
चित्र : पाणि
अतिथि के रूप में आये कमांडर नरेन्द्रदेव तथा उसके पुत्र रवीन्द्रदेव के साथ तांत्रिक राजर्षि नागबंधु, सपदिश की गुफा मंदिर में आदित्य को पकड़कर लाने के लिए एक विचित्र आकृति पाशंकर की सहायता का आवाहन करता है। वह आदित्य को अपने से अधिक शक्तिशाली पाता है।
वह तांत्रिक के पास वापस जाकर अपनी असफलता को स्वीकार करता है।
राजा महेन्द्रवर्मा नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव को देशद्रोही घोषित करता है।
आदित्य सपदिश जाने के लिए तैयार होता है।

सपदिश पहुँचने पर आदित्य के साथ जानेवाले लोग अपने आवास के लिए तम्बू लगाते हैं। वह एक दल को घाटी के सर्वेक्षण के लिए भेजता है।
नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव या उनके सिपाहियों पर नजर रखो। यह भी पता करो कि गुफा मंदिर में जाने के लिए क्या कोई मार्ग है।

यह कौन हो सकता है? यह नारी स्वर है।
किसी के आर्त नाद से अपने शिबिर में आदित्य का ध्यान भंग हो जाता है।
आदित्य अपने शिबिर के बाहर एक आदिवासी दम्पति को जंजीर में बंधा हुआ देखता है।

वे लोग कौन हैं?
महोदय, वे सर्पदेश के आदिवासी हैं।
हम लोगों ने इन्हें सन्देहजनक ढंग से घूमते हुए पाया।
बोलो! यदि तुम सच-सच बता दो...

...तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।
बताओ, तुम कौन हो?
हुजूर! मैं अपनी जाति के मुखिया की बेटी हूँ। मैं इस युवक से विवाह करना चाहती हूँ।

हम लोग भागने की कोशिश में थे ताके राजर्षि नागबंधु इसे पकड़ न ले। हम लोग निर्दोष हैं। मेहरबानी करके हमें बचा लीजिए।

हुजूर ! मेरा नाम आदित्य है। राजर्षि और उसके शिष्य एक दूसरे आदित्य को खोज रहे हैं। उसके नहीं मिल पाने पर वे मुझे ढूँढ रहे हैं। हमलोग भागने की कोशिश में थे...

...एक गुप्त मार्ग से। तभी इन लोगों ने हम लोगों को पकड़ लिया। हमलोग जान बचाने के लिए भाग रहे हैं।

आदित्य के शरीर पर गरुड़ रेखा है और हमारी जाति के लोग सर्प उपासक हैं।
तुमने एक गुप्त मार्ग के बारे में कहा। वह कहाँ से आरंभ होता है और कहाँ खत्म?
यह गुफा मंदिर से आरंभ होता है, अग्नि कुण्ड के निकट से...
...यह मंदिर के सरोवर के निकट समाप्त होता है। वहीं पर आपके आदमियों ने हम लोगों को पकड़ा।
आप, हुजूर, आदित्य? हम लोगों ने नरेन्द्रदेव के आदमियों से आपके साहसिक कारनामों के विषय में सुना है।
आह! अब मैं बताता हूँ मैं कौन हूँ। मैं वहीं आदित्य हूँ जिसे तुम्हारा राजर्षि खोज रहा है। क्या तुम मुझे उसके पास तक जाने का मार्ग बताओगे?
क्रमशः

मनोरंजन टाइम्स

एक भेड़ की मूर्ति बनाओ

वनस्पति उत्कीर्णन एक़ चित्ताकर्षक गतिविधि है। करके देखो !

तुम्हें आवश्यकता पड़ेगी : उद्यान मिट्टी का एक ट्रे, सरसों का दाना, सफेद मूली, फूलगोबी, काली मिर्च का दाना, मजबूत पतली लकड़ी, चाकू और फेविकोल।

भेड़ उत्कीर्ण करने के कुछ दिन पहले मिट्टी में सरसों के दाने बो दो और प्रतिदिन पानी डालते रहो। तीन-चार दिनों के बाद उसके अंकुर इतने बड़े हो जायेंगे कि तुम्हारी भेड़ के लिए चरागाह बन जाये। फूलगोबी का बड़ा टुकड़ा चरागाह पर एक वृक्ष होगा।

भेड़ कैसे बनायें : मूली के मोटा भाग का सिरा काट लो। यह भेड़ का सिर होगा। पतले हिस्से के सिरे को चीर दो। यह भेड का खुला हुआ मुख हो जायेगा। काली मिर्च के दो दानों से उसकी आँखें बना दो।

भेड़ का शरीर मूली के चौड़े मध्य भाग को काटकर बनाओ। बराबर लम्बाई की पाँच पतली लकड़ियों से पैर और गर्दन बना दो। मूली की तराशी हुई पतली फाँकों को शरीर पर चिपका दो। यह उसकी ऊन है। दो छोटी फाँकों को चिपकाकर कान बना दो। अब उसे चरागाह पर रख दो।
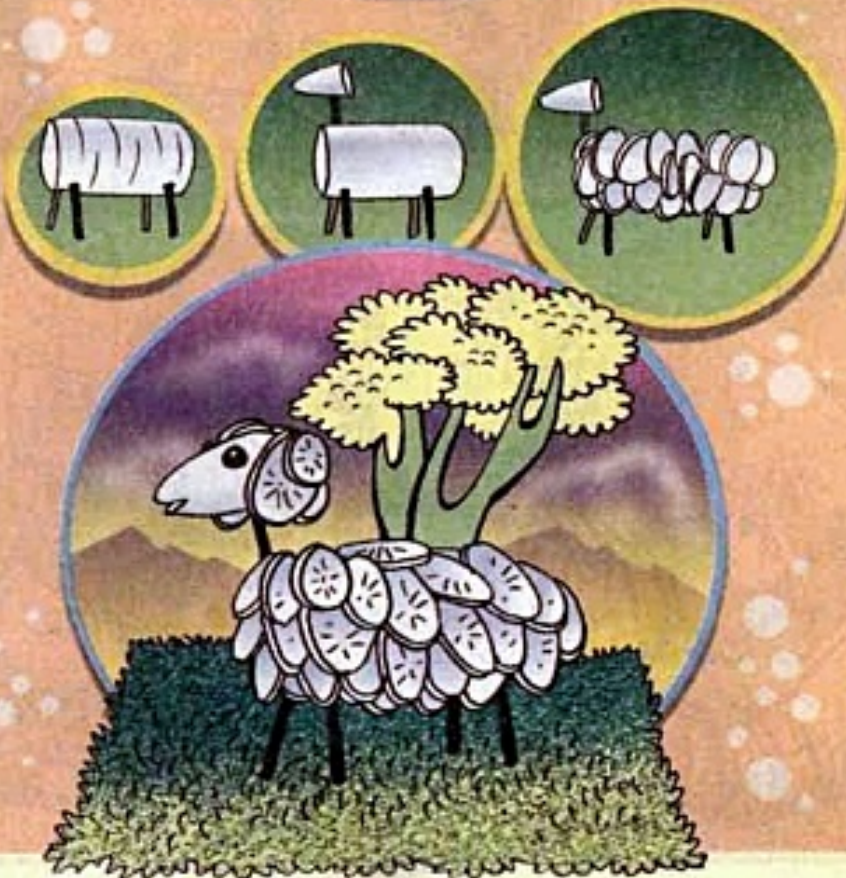
उन्हें खोज निकालो

ये दोनों चित्र देखने में एक समान लग सकते हैं, किन्तु इनमें आठ भिन्नताएँ हैं। शुभ खोज !

बेचारे रोहित को मदद करो न!

ओह, प्यारे !
रोहित खरगोश बीमार है।
और उसकी गोलियाँ और कैप्सूल्स
सारे कमरे में बिखरे पड़े हैं।
क्या तुम उन्हें चुनने में
मदद नहीं करोगे?
गोलियाँ और कैप्सूल्स
संख्या में कितने हैं,
गिनकर बताओ।

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)
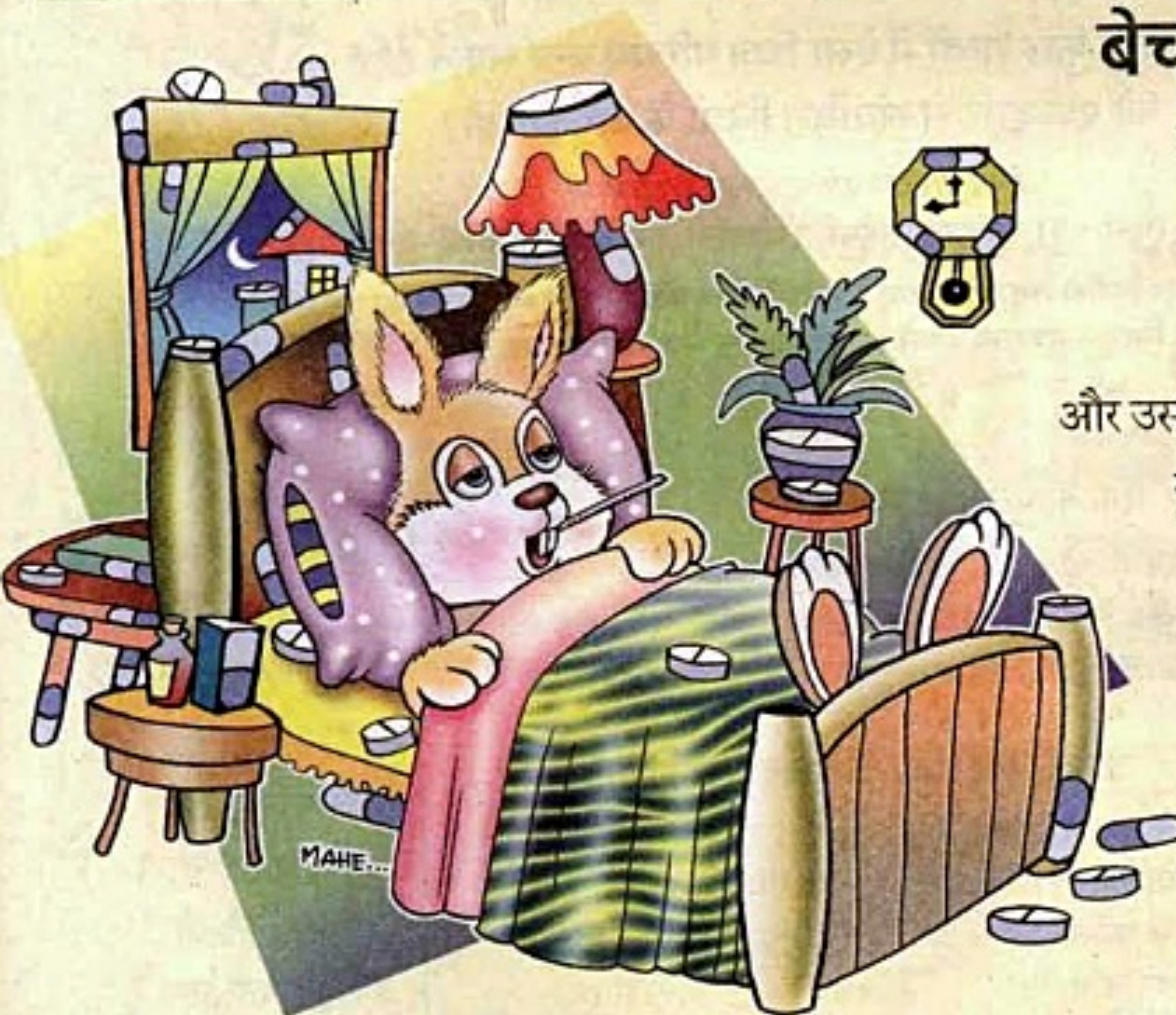
चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

सितम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

टी. अभिषेक, C/o. टी. सुभाष चन्द्र

३१-७-१, कुम्मुरी स्ट्रीट, निकट अलीपुरम गाँधी स्टैचू जंक्शन,
विशाखापट्टनम, आन्ध्र प्रदेश - ५३० ००४.

विजयी प्रविष्टि
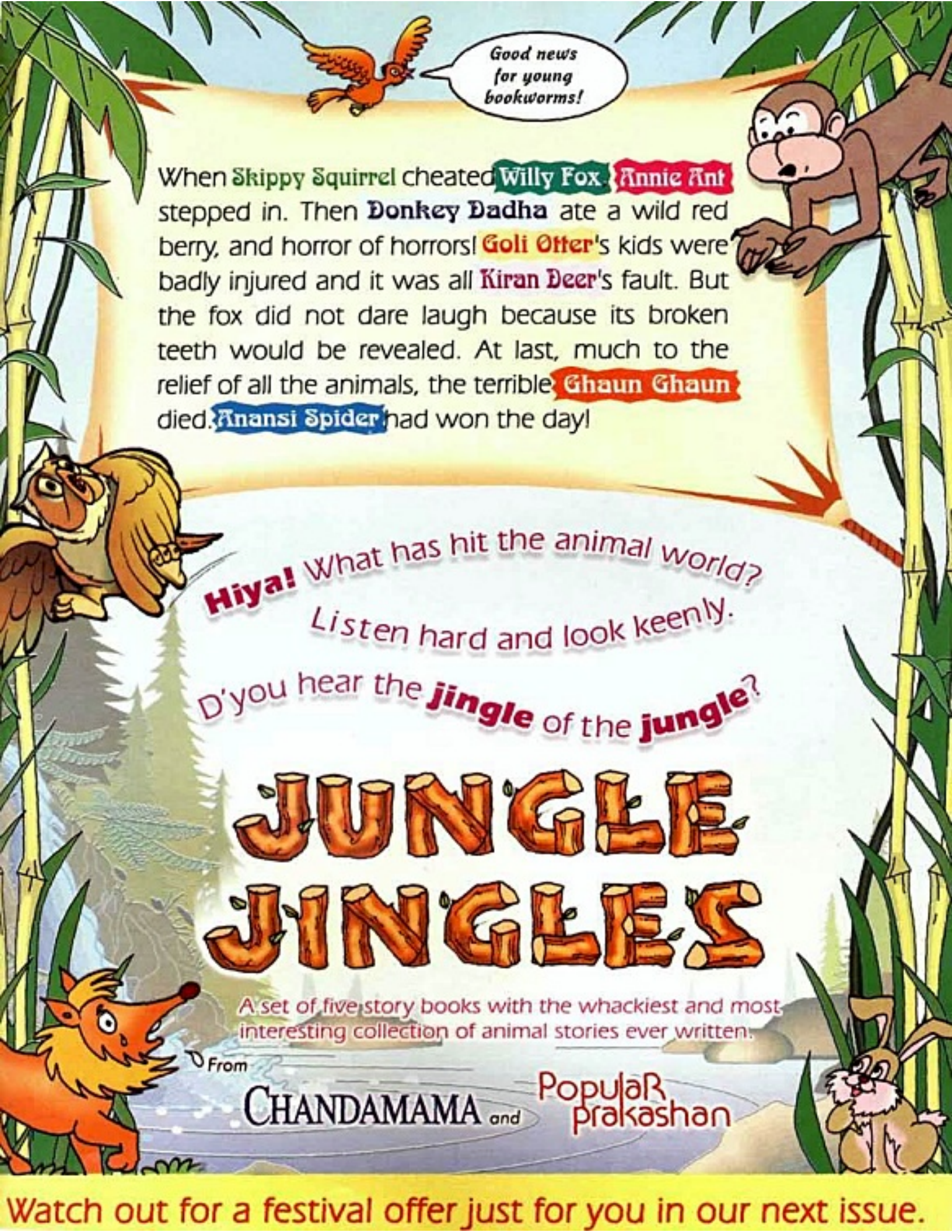
आओ दीदी मिल जुल खेलें इन फूलों के साथ।
ठहर जरा ओ छुटकी बहना मांज के बर्तन आती धोकर हाथ॥

मनोरंजन टाइम्स (पृष्ठ ६४-६५) के उत्तर

उन्हें खोज निकालो !

१. टोपी के अंत में रोयेंदार बॉल
२. टोपी के ऊपर का डिज़ाइन
३. सींग पर धारियाँ
४. बकरे का चौथा पैर
५. बकरे की दाढ़ी
६. धूल के बादल
७. लड़के की जेब
८. जूते का डिज़ाइन

बेचारे रोहित की मदद करो

३८ गोलियाँ और कैप्सूल्स

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

Good news for young bookworms!
When Skippy Squirrel cheated Willy Fox, Annie Ant stepped in. Then Donkey Dadha ate a wild red berry, and horror of horrors! Goli Otter's kids were badly injured and it was all Kiran Deer's fault. But the fox did not dare laugh because its broken teeth would be revealed. At last, much to the relief of all the animals, the terrible Ghaun Ghaun died. Anansi Spider had won the day!
Hiya! What has hit the animal world?
Listen hard and look keenly.
D'you hear the jingle of the jungle?
JUNGLE JINGLES
A set of five story books with the whackiest and most interesting collection of animal stories ever written.
From
CHANDAMAMA and Popular Prakashan
Watch out for a festival offer just for you in our next issue.

CHANDAMAMA (Hindi) NOVEMBER 2002
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002
Licensed to post without prepayment. WPP No. 541/02